मूल्य : 20/-

घोषणा पत्र संख्या : 153/2016-17

वर्ष : ३

अगस्त : २०१८, विक्रमी सम्वत् : २०७५
सृष्टि सम्वत् : १९६०८५३११९, दयानन्दाब्द : १९५

अंक : २

ओ३म्

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

सत्य और ज्ञान से भरपूर आर्यसमाज नोएडा का मासिक मुखपत्र

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

"सा प्रथमा संस्कृतिविश्ववारा"

नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायो त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु। अवतु माम्। अवतु वक्तारम्।।

ईश्वर का व्यापक ज्ञानस्वरूप पूज्य और सहज स्वभाव जानकर हम उसकी उपासना करें तथा जीवन में सदा सत्य का आचरण करें।

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस
(पुण्यतिथि : 18 अगस्त)

पं इन्द्र विद्यावाचस्पति
(पुण्यतिथि : 23 अगस्त)

पं गंगा प्रसाद उपाध्याय
(पुण्यतिथि : 29 अगस्त)

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती
1824-1883

आर्ष कन्या गुरुकुल वेदधाम सोरखा नोएडा में नवनिर्मित पाकशाला का उद्घाटन करते मुख्य अतिथि इ. एस. रंगनाथन (MD-IGL), श्री सुधीर वालिया- अध्यक्ष रोटरी क्लब नोएडा, श्रीमती सुनीता- उपकुलपति अमेटी विश्वविद्यालय, संस्था कुलपति आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार एवं अन्य पदाधिकारी, शिक्षकगण एवं ब्रह्मचारिणियां।

ओ३म्

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।।

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

संरक्षक
श्री आनंद चौहान, श्री सुधीर सिंघल
श्रीमती गायत्री मीना 'प्रधान'

प्रबंध संपादक
आर्य कै. अशोक गुलाटी

संपादक
आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार

व्यवस्थापक
ओमकार शास्त्री

प्रकाशक और मुद्रक
स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक डॉ. जयेन्द्र कुमार द्वारा वत्स ऑफसेट, मुद्दा हाऊस, सी-ब्लॉक, बारात घर, चौड़ा रघुनाथपुर, सेक्टर-22, नोएडा से मुद्रित एवं आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित किया।

Title Code : UPMUL-200652

घोषणा पत्र संख्या : 153/06.06/2016-17

मूल्य

एक प्रति	: 20/-	वार्षिक	: 250/-
पांच वर्ष	: 1100/-	आजीवन	: 2500/-

विदेश में वार्षिक शुल्क : 3100/-

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय	पृष्ठ
1.	संपादकीय : शिक्षा ही मानवता...	2
2.	मां की सेवा ही यशस्वी बनाती है	3
3.	येन द्यौरुग्रा	4-5
4.	महाभारत और धर्म	6-7
5.	आर्य समाज व आर्यवीर...	8-9
6.	ईश्वर की उपासना संस्कृत...	10
7.	विद्वान् सर्वत्र पूज्यते	11
8.	महापुरुषों को नमन...	12-13
9.	यदि आज स्वामी दयानन्द...	14
10.	महर्षि दयानन्द सरस्वती...	18
11.	समाचार-सूचनाएं	22
12.	सुस्वास्थ्य : गर्म पानी विषैले...	24

पाठकवृंद : कृपया स्वयं समाज एवं राष्ट्र के उत्थान के लिए 'विश्ववारा संस्कृति' के आजीवन सदस्य बनकर जीवन पथ को पुष्पित, प्रफुल्लित और प्रमुदित करें। आपका चित्र पत्रिका में प्रकाशित होगा। आपके बहुमूल्य सुझावों का हम स्वागत करते हैं।

लेखकवृंद से अनुरोध है कि रचना मौलिक एवं अप्रकाशित हो, रचना का लेखन स्पष्ट और सुपाठ्य हो। दो प्रतियां उस रचनाकार को भेज दी जाएगी, जिनकी रचना प्रकाशित हुई है।

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	:	5100 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-2	:	3100 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-3	:	2500 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	:	1000 रुपये
आधा पृष्ठ अंदर	:	600 रुपये

'विश्ववारा संस्कृति' में सभी पद अवैतनिक हैं। प्रकाशित विचारों से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र गौतमबुद्धनगर होगा।

संपादकीय कार्यालय

आर्य समाज, बी-69,
सेक्टर-33, नोएडा- 201301
गौतमबुद्धनगर, (उ.प्र.)
दूरभाष : 0120-2505731,
9871798221

Web : www.aryasamajnoida.org, E-mail : info.aryasamajnoida33@gmail.com

संपादकीय...

।।ओ३म्।।

शिक्षा ही मानवता की सेवा है

यद्यपि संसार में बहुत सारी वस्तुएं हैं, परंतु विद्या को ही सर्वश्रेष्ठ धन माना गया है। शास्त्रों में भी कहा गया है- विद्या धन सर्वश्रेष्ठ धन है। विद्या के द्वारा मनुष्य अपने कर्त्तव्य को जानता है। विद्या से ही मानव समझता है कि क्या धर्म है क्या अधर्म, क्या करना चाहिए क्या नहीं करना चाहिए, क्या पुण्य है क्या पाप है। किस कार्य को करने से लाभ होगा किस कार्य को करने से हानि। मनुष्य विद्या प्राप्त करके सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रयास करता है और विद्या से ही मनुष्य, मनुष्य कहलाने लायक होता है अन्यथा भर्तृहरि के शब्दों में-

येषां न विद्या न तपो न दानं ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मर्त्यलोके भुविभारभूता मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति।।

जो मनुष्य विद्या से रहित है वह कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य के अज्ञान से पशुओं की तरह आचरण करता है, इसलिये मनुष्य को पशु की संज्ञा दी गई है।

'विद्या विहीनः पशु' ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के तृतीय समुल्लास में विद्या को जीवन सर्वश्रेष्ठ बताते हुए कहा है-

विद्या विलास मनसो धृतशील शिक्षाः, सत्यव्रता रहितमानमलापहाराः।
संसारदुःख दलनेन सुभूषिता ये धन्या नरा विहितकर्म परोपकाराः।।

जिन पुरुषों का मन विद्या के विलास में तत्पर रहता, सुन्दर शील स्वभाव युक्त, सत्यभाषणादि नियम पालन युक्त और जो अभिमान, अपवित्रता से रहित अन्य मलिनता के नाशक, सत्युपदेश विद्यादान से संसारीजनों के दुःखों को दूर करने से सुशोभित, वेद विहित कर्मों से पराये उपकार करने में रहते हैं, वे नर-नारी धन्य हैं।

शास्त्रों में विद्यादान को परमदान की संज्ञा दी गई है-

अन्नदानं महादानं विद्यादानंमतः परम्।
अन्नं तु क्षणिकः तुष्टि, यावज्जीवन्तु विद्यया।।

अन्नदान महादान की संज्ञा में आता और विद्यादान परम दान की संज्ञा में आता है क्योंकि अन्न के द्वारा कुछ ही समय तक तृप्ति प्राप्त होती है। परन्तु विद्यादान द्वारा जब तक जीवन रहता है। उस पुरुष का पोषण होता ही रहता है। विद्या के द्वारा ही मनुष्य सर्वत्र सम्मान को प्राप्त करता है तथा विद्या के द्वारा ही व्यक्ति प्रत्येक पद को प्राप्त करने में समर्थ होता है। अतः वेदज्ञ एवं ज्ञानी व्यक्तियों का चाहिए कि वे अपने ज्ञान के द्वारा तथा अपनी विद्या के द्वारा मानव जाति को परोपकार करें। जिससे मनुष्य सन्मार्ग पर चलकर सुखी जीवन को व्यतीत करें।

'ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः'

अतः सभी को आलस्य प्रमादादि को छोड़कर विद्या अध्ययन अवश्य करना चाहिये। विद्वानों का भी मत है कि विद्या से मोक्ष प्राप्ति सम्भव है।

■ आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार

विद्या धन सर्वश्रेष्ठ धन है, विद्या के द्वारा मनुष्य अपने कर्त्तव्य को जानता है। विद्या से ही मानव समझता है कि क्या धर्म है क्या अधर्म, क्या करना चाहिए क्या नहीं करना चाहिए, क्या पुण्य है क्या पाप है। किस कार्य को करने से लाभ होगा किस कार्य को करने से हानि। मनुष्य विद्या प्राप्त करके सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रयास करता है और विद्या से ही मनुष्य, मनुष्य कहलाने लायक होता है अन्यथा भर्तृहरि के शब्दों में- येषां न विद्या न तपो न दानं ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः। ते मर्त्यलोके भुविभारभूता मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति।। जो मनुष्य विद्या से रहित है वह कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य के अज्ञान से पशुओं की तरह आचरण करता है, इसलिये मनुष्य को पशु की संज्ञा दी गई है। 'विद्या विहीनः पशु' ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के तृतीय समुल्लास में विद्या को जीवन सर्वश्रेष्ठ बताते हुए कहा है- विद्या विलास मनसो धृतशील शिक्षाः, सत्यव्रता रहितमानमलापहाराः। संसारदुःख दलनेन सुभूषिता ये धन्या नरा विहितकर्म परोपकाराः।।

मां की सेवा ही यशस्वी बनाती है

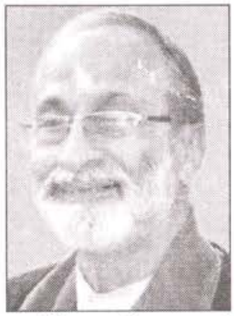

आर्य कै. अशोक गुलाटी
प्रबंध संपादक

'भागवत पुराण के अनुसार, माताओं की सेवा से मिला आशीष सात जन्मों के दोषों को दूर करता है।' उसकी भावनात्मक शक्ति संतान के लिए सुरक्षा कवच का कार्य करती हैं ऋग्वेद के एक मंत्र में मां की प्रशंसा करते हुए कहा गया है कि हे उषा के समान प्राणदायिनी मां! हमें महान सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करो। तुम हमें नियम-परायण बनाओ। हमें यश और अद्‌भुत ऐश्वर्य प्रदान करो। इस मंत्र के माध्यम से ऋषि यह सिद्ध करना चाहते हैं कि मां की शक्ति अपार होती है, लेकिन इसका लाभ श्रद्धावान और सेवा भाव से भरपूर संतान को ही मिलता है। यदि वे मां के हृदय को ठेस पहुंचाते हैं, तो निश्चित तौर पर आशीष तरंगें निष्क्रिय हो जाती हैं। ऐसा आप्त पुरुषों का वचन है कि जिस दिन हमारे कारण मां की आंखों में आंसू आते हैं उस दिन हमारे जीवन के सारे पुण्य पाप में बदल जाते हैं।

संत कहते हैं कि मां के चरणों में स्वर्ग होता है। भगवान राम ने भी माता को स्वर्ग से महान बताया है। ऋग्वेद में ऋषि माताओं से आग्रह करते हैं कि जल के समान वे हमें शुद्ध करें। वे हमें तेजवान और पवित्र बनाएं। माता अपने पुत्र को बलवान बना सकती है। जैसे-कहा जाता है कि मकान की नींव कमजोर हो तो मकान गिर जाता है उसी प्रकार मां के द्वारा दी जाने वाली संस्कारित शिक्षा के बिना मनुष्य का जीवन पशु तुल्य और निस्तेज हो जाता है और ऐसे व्यक्ति का समाज में महत्व खत्म हो जाता है।

'भागवत पुराण के अनुसार, माताओं की सेवा से मिला आशीष सात जन्मों के दोषों को दूर करता है।' उसकी भावनात्मक शक्ति संतान के लिए सुरक्षा कवच का कार्य करती हैं ऋग्वेद के एक मंत्र में मां की प्रशंसा करते हुए कहा गया है कि हे उषा के समान प्राणदायिनी मां! हमें महान सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करो। तुम हमें नियम-परायण बनाओ। हमें यश और अद्‌भुत ऐश्वर्य प्रदान करो। इस मंत्र के माध्यम से ऋषि यह सिद्ध करना चाहते हैं कि मां की शक्ति अपार होती है, लेकिन इसका लाभ श्रद्धावान और सेवा भाव से भरपूर संतान को ही मिलता है। यदि वे मां के हृदय को ठेस पहुंचाते हैं, तो निश्चित तौर पर आशीष तरंगें निष्क्रिय हो जाती हैं। ऐसा आप्त पुरुषों का वचन है कि जिस दिन हमारे कारण मां की आंखों में आंसू आते हैं उस दिन हमारे जीवन के सारे पुण्य पाप में बदल जाते हैं।

ऋग्वेद के एक दूसरे मंत्र में ऋषि स्पष्ट कहते हैं कि माता-पिता का पवित्र धीर, विनम्र और अग्नितुल्यतेजस्वी पुत्र अपनी शक्ति से संसार को पवित्र करता है। द्वापर युग का एक उदाहरण मिलता है कि मां गंगा ने देवव्रत (पितामह भीष्म) को योग्य धर्नुधर बना दिया। उनके आगे बड़े-बड़े योद्धा युद्ध नहीं कर पाते थे। पितामह भीष्म अपनी सौतेली मां की बात सुनकर पिता के सुख के लिए अपना सारा जीवन ब्रह्मचारी रहकर बिता दिया।

वह सभी जगह ज्ञान और सदाचार का प्रचार करें। वेदों में माता को अंबा, देवी, सरस्वती, शक्ति, ज्योति, उषा, पृथ्वी आदि से संबोधित किया गया है। महाभारत के अनुशासन पर्व में पितामह भीष्म कहते हैं कि भूमि के समान कोई दान नहीं, माता के समान कोई गुरु नहीं, सत्य के समान कोई धर्म नहीं, दान के समान कोई पुण्य नहीं।

चाणक्यनीति में कौटिल्य कहते हैं कि माता के समान कोई देवता नहीं है। माता-परम देव होती है। माता की सेवा से साथ-साथ पिता, गुरुओं और वृद्धजनों की सेवा करने वाला, दीन हीन की सहायता करने वाला, संसार में यश प्राप्त करता है।

उसकी आलोचना करने का साहस उसके शत्रु भी नहीं कर सकते हैं। यजुर्वेद में एक प्रेरणादायक मंत्र है, जिसमें कहा गया है कि जिज्ञासु पुत्र तू माता की आज्ञा का पालन कर। अपनी दुराचरण से माता को कष्ट मत दे। अपनी माता को अपने समीप रख। मन को शुद्ध कर और आचरण की ज्योति को प्रकाशित कर। वास्तव में माता स्वयं में एक पवित्रतम शक्ति है। उसकी सेवा करें, साथ ही जो माता तुल्य हैं और वृद्ध, असहाय और वंचित हैं, वे भी हमारी सेवा के अधिकारी हैं। हमें सभी की सेवा करनी चाहिए क्योंकि मातृशक्ति का सम्मान आज के युग में बहुत जरूरी है। जबकि हम सब जानते हैं कि यदि माताओं का सम्मान नहीं करेंगे तो राष्ट्र और समाज का पतन हो जायेगा। इसलिए हम सभी संकल्प लें और (माता निर्माता भवति इस कथन को विचार कर माताओं की सेवा और सम्मान करें।

येन द्यौरुग्रा

स्व. प्रो. उमाकान्त उपाध्याय

इस अंक से ईश्वर स्तुति, प्रार्थना, उपासना के पांचवे मंत्र की व्याख्या प्रस्तुत की जा रही है, मनन चिन्तन कर जीवन सफल करें।

- प्रबंध संपादक

सामान्य रूप से देखने पर मंत्र सीधा सा लगता है। किंतु जैसे ही अर्थ की गहराई में जिज्ञासा बुद्धि को जागरित करते हैं तो मंत्र में चिंतन रमणीयता ओत प्रोत प्रतीत होने लगती है। प्रथम दृष्टि में यह मंत्र हिरण्य गर्भ: मंत्र के स दाधार पृथिवीं द्याभुतेमाम् का पूरक परिपूरक, स्पष्टार्थक सा लगता है। किंतु थोड़ा भीतर पैठने पर चिंतन विश्वास की एक नयी छवि दृष्टिगोचर होने लगती है। साथ ही प्रभु की महिमा के नये आयाम, नये स्वरूप हृदय में होने लगते हैं।

मंत्र का पूर्ण पाठ निम्न प्रकार है-

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढ़ा येन स्वः स्तभितं येन नाकः। योऽअन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम।। यजु. 32-6

मंत्र के भाव को हृदयंगम करने के लिए इसे निम्न खंडोंमें विभाजित करके समझने का यत्न करते हैं-

1. येन उग्रा द्यौः दृढ़ा- जिस परमेश्वर ने उग्र, तेजस्वी द्यौ लोक को धारण किया है।

2. येन पृथ्वी च दढ़ा- जिस जगदीश्वर ने पृथ्वी लोक को धारण किया है।

3. येन स्वः स्तभितम्- जिस प्रभु ने सुख को धारण किया है।

4. येन नाकः स्तभितम्- जिस जगदीश्वर ने दुख रहित मोक्ष को धारण किया है।

5. यो अंतरिक्षे रजसः विमानः - जो अंतरिक्ष में सभी लोक-लोकान्तरों को विशेष मानयुक्त करके विशेष रूप से नियमों में बांध कर रखता है और उन्हें गति विशेष में संचालित करता है।

6. कस्मै देवाय हविषा विधेम- उपरिलिखित विशेषताओं से विशिष्ट सम्पन्न सुखदायक, कामना करने योग्य परब्रह्म की प्राप्ति के लिए सब सामर्थ्य से विशेष भक्ति करें।

1+2 येनद्यौरुग्रा पृथिवी च दृढ़ा- प्रथम और द्वितीय, दोनों की संयुक्त क्रिया दृह, दृंह+क्त, कृदन्त पद, दृढ़ है। अत: दोनों पर साथ-साथ ही विचार करना सुविधाजनक रहेगा। दोनों खंडों का सामूहिक अर्थ बना कि जिस जगदीश्वर ने उग्रतेजस्वी द्यौलोक को और पृथ्वी लोक को धारण किया है। अर्थात् जिस परमेश्वर के आधार पर द्यौ और पृथ्वी टिके हुए हैं।

संसार में पदार्थ मात्र को कोई न कोई आधार चाहिए। उसी आधार पर वह वस्तु टिकती है, उसी पर टिकी रहती है। हम घर बनाते हैं, वह नींव पर, भित्ति पर टिका रहता है। दीवाल थोड़ी निर्बल भी चल जाती है। किंतु नींव तो खूब ही दृढ़, मजबूत होनी चाहिए। चौकी, कुर्सी, सोफा तो भूमि के ऊपर टिके रहते हैं। हम तो धरती पर टिके हैं। हमारे मकान का आधार तो पृथ्वी है।

प्रश्नों का प्रश्न यह है कि पृथ्वी किसके आधार पर टिकी है। वैज्ञानिक कहेंगे कि पृथ्वी का आधार सूर्य का गुरुत्वाकर्षण है। फिर सूर्य स्वयं पृथ्वी से लाखों गुना बड़ा है। सूर्य के साथ ही सूर्यमंडल के ग्रह उपग्रह लगे हुए हैं। सभी गतिशील हैं, चक्कर लगा रहे हैं। किंतु प्रश्न तो अपनी जगह पर अटल खड़ा है। सूर्य मंडल का आधार क्या है?

सूर्य मंडल ही तो सीमा नहीं है। असंख्य सूर्य और प्रत्येक सूर्य का अपना सूर्य मंडल, सारे सूर्यमंडलों का ब्रह्माण्ड है। इस ब्रह्माण्ड का आधार क्या है? बिना किसी आधार के तो ये असंख्य सूय मंडल, आकाश गंगाएं सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड टिक नहीं सकते।

कहते हैं कि यह सब आकर्षण शक्ति की महिमा है। ठीक है, आकर्षण

हम घर बनाते हैं, वह नींव पर, भित्ति पर टिका रहता है। दीवाल थोड़ी निर्बल भी चल जाती है। किंतु नींव तो खूब ही दृढ़, मजबूत होनी चाहिए। चौकी, कुर्सी, सोफा तो भूमि के ऊपर टिके रहते हैं। हम तो धरती पर टिके हैं। हमारे मकान का आधार तो पृथ्वी है। प्रश्नों का प्रश्न यह है कि पृथ्वी किसके आधार पर टिकी है। वैज्ञानिक कहेंगे कि पृथ्वी का आधार सूर्य का गुरुत्वाकर्षण है। फिर सूर्य स्वयं पृथ्वी से लाखों गुना बड़ा है। सूर्य के साथ ही सूर्यमंडल के ग्रह उपग्रह लगे हुए हैं। सभी गतिशील हैं, चक्कर लगा रहे हैं। किंतु प्रश्न तो अपनी जगह पर अटल खड़ा है। सूर्य मंडल का आधार क्या है? सूर्य मंडल ही तो सीमा नहीं है। असंख्य सूर्य और प्रत्येक सूर्य का अपना सूर्य मंडल, सारे सूर्यमंडलों का ब्रह्माण्ड है। इस ब्रह्माण्ड का आधार क्या है? बिना किसी आधार के तो ये असंख्य सूर्य मंडल, आकाश गंगाएं सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड टिक नहीं सकते। कहते हैं कि यह सब आकर्षण शक्ति की महिमा है। ठीक है, आकर्षण शक्ति की भी महिला है। किंतु शक्ति तो किसी शक्तिमान् की होती है। नियम किसी नियमवाले नियामक का होता है। वह शक्तिमान् तो सर्वशक्तिमान जगदीश्वर है। वह नियामक तो सर्व नियंता जगदीश्वर ही है। मध्यकाल में जब विद्या का ह्रास हो गया तो इन प्रश्नों के विचित्र-विचित्र समाधान होने लगे। किसी ने कहा पृथ्वी सांप के फन पर टिकी है। किसी ने कहा बैलों के सींग पर, कोई बोला कछुए पर इत्यादि, इत्यादि।

शक्ति की भी महिला है। किंतु शक्ति तो किसी शक्तिमान् की होती है। नियम किसी नियमवाले नियामक का होता है। वह शक्तिमान् तो सर्वशक्तिमान जगदीश्वर है। वह नियामक तो सर्व नियंता जगदीश्वर ही है।

मध्यकाल में जब विद्या का ह्रास हो गया तो इन प्रश्नों के विचित्र-विचित्र समाधान होने लगे। किसी ने कहा पृथ्वी सांप के फन पर टिकी है। किसी ने कहा बैलों के सींग पर, कोई बोला कछुए पर इत्यादि, इत्यादि।

इस विषय पर स्वामी दयानन्द की टिप्पणी ध्यान देने योग्य है। स्वामीजी अपने अद्वितीय ग्रंत सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम समुल्लास में लिखते हैं-

प्रश्न- इसका, पृथ्वी का, धारण कौन करता है? कोई कहता है, शेष, अर्थात् सहस्त्र फणवाले सर्प के शिर पर पृथ्वी है। दूसरा कहता है कि बैल के सींग पर। तीसरा कहता है किसी पर नहीं। चौथा कहता है कि वायु के आधार पर। पांचवा कहता है- सूर्य के आकर्षण से खैंची हुई अपने ठिकाने पर स्थित। छठवां कहता है कि पृथ्वी भारी होने से नीचे-नीचे आकाश में चली जाती है- इत्यादि में किस बात को सत्य मानें?

उत्तर- जो सर्प और बैल के सींग पर धरी हुई पृथ्वी स्थित बतलाता है उससे पूछना चाहिए कि सर्प और बैल के मां-बाप के जन्म के समय किस पर थी? तथा सर्प और बैल आदि किस पर हैं? बैल वाले मुसलमान तो चुप ही कर जाएंगे। परंतु सर्पवाले कहेंगे कि सर्प कूर्म पर, कूर्म जल पर, जल अग्नि पर और वायु आकाश में ठहरा है। उनसे पूछना चाहिए कि ये सब किस पर है? अवश्य कहेंगे परमेश्वर पर।

ईसाई, मुसलमान और हिंदू सभी की पुराण कथाओं में यही सर्प बैल जैसे आधार पर ऊंटपटांग बातें लिखी हैं। समस्या तो केवल पृथ्वी को धारण करने की नहीं है। समस्या तो सौर मंडल, अंतरिक्ष और द्यु लोक के आधार, संचरण आदि की भी है। नास्तिक वैज्ञानिकों ने तो यह सब कुछ आकस्मिक कहकर, पिंड छुड़ा लिया। प्रसिद्ध वैज्ञानिक हक्सले का एक उद्धरण देखिए- We find the universe terrifying because it appears to be indifferent to life like our own, Emotion ambiton and achievent art and religions all seem ezually foreign to its plan. Perhaps, indeed we ought to say it appears to be actively hostile to life like our own.

Into such a universe we have stumbled if not exactly by mistake, at least as the result of what may properly be described as an accident.

From his Essay The Dying Sun.

शब्दानुवाद की तो आवश्यकता नहीं है किंतु भावार्थ यह है कि यह विश्व भयानक प्रतीत होता है। यह हमारे जीवन, हमारी भावनाओं, महत्वाकांक्षाओं, उपलब्धियों, कला, धर्म आदि से उदासीन ही नहीं, बल्कि सम्भवत: इनसब का विरोधी लगता है, हमारे जीवन के प्रति शत्रुभाव है।

ऐसे संसार में हम भूल से लुढ़क पड़े हैं, पर कम से कम किसी आकस्मिक घटना के परिणाम हैं। इन सब विचारकों, वैज्ञानिकों के हिसाब से इस संसार में जीवन आकस्मिक, चेतना आकस्मिक, ग्रह-उपग्रह आकस्मिक, सभी कुछ आकस्मिक। क्या सब कुछ आकस्मिक कहकर ये विचारक, वैज्ञानिक, दार्शनिक, उपहसनीय चिंतन प्रमाद या चिंतन आलस्य का आश्रय नहीं ले रहे हैं?

आकस्मिक किसे कहते हैं? जिसका कोई कारण न हो, जो आकस्मात् अ+कस्मात हो। जिसमें कोई नियम, पद्धति, तंत्र, एकरूपता का अभाव हो। प्रकृति में ऐसी कोई घटना घटित नहीं होती जो किसी नियम या तंत्र के घेरे में न आती हो। नियामक के नियम, नियंता के नियंत्रण ऐसी एकरूपता लिए हुए हैं कि उनका अपना अपना जगत् निश्चित नियम पर चलता रहता है। वनस्पति में नियमों की एकरूपता भी कितनी विचित्र है। वनस्पतियों की जड़ धरती से अपनी पौष्टिक खुराक खींचती हैं और तना, डाल, टहनी, पत्ता, फूल, फल, सबको खुराक पहुंचाती रहती है। कलम लगाकर वनस्पति की किस्मों को, जातियों को, उन्नत किया जा रहा है। आलू के पौधे में टमाटर की कलम लगाकर, जड़ में आलू, टहनी में टमाटर की उपज सुनने में आई है। किंतु नियम नियंत्रण सब जगह सुस्पष्ट है। वनस्पतियों में भी नर-मादा और गर्भकेसर एवं परागकेसर की क्रियाएं सुस्पष्ट नियमों के अधीन हैं।

मनुष्य और पशु प्राणियों के शरीर की एकरूपता भी विचित्र है। कोई प्रयोग चूहों पर किया गया, बंदरों, अन्य छोटे प्राणियों पर किया गया, फिर मनुष्य के लिए औषध की व्यवस्था की गयी। किसी भी देश का मनुष्य हो, शरीर की बनावट सब की मोटे तौर पर प्राय: एक सी ही रहती है। यह सब इस बात का प्रमाण है कि यह संसार, इसके पशु पक्षी प्राणी, आकस्मिक नहीं, अपितु, नियम-नियंत्रण के अधीन संचालित हो रहे हैं।

(शेष अगले अंक में) ○○

सुधी पाठकों से आत्म निवेदन

कृपया अपने विचारों से अवश्य अवगत करावें ताकि पत्रिका को और सुरुचिपूर्ण बनाने का प्रयास किया जाए।

■ प्रबंध संपादक : 9871798221

महाभारत और धर्म

डा. दीवान चन्द, डी.लिट.

भारत के काव्यों में, एक पुस्तक की स्थिति में, महाभारत शायद सबसे बड़ा काव्य है। इसे पढ़ते हुए हम अनेक मनुष्यों से परिचित होते हैं। इनमें न कहने वालों की कमी है, न सुनने वालों की। जिन विषयों पर वे कहते सुनते हैं वह भी असीम से दीखते हैं। यह स्वाभाविक ही है कि धर्म पर भी इसमें पर्याप्त कहा गया हो। चूंकि कहने वाला एक नहीं, हम यह आशा नहीं कर सकते कि इसमें अविरोध नीति-विवेचन मिले, जैसा हम किसी दार्शनिक की पुस्तक से आशा कर सकते हैं। वक्ता दार्शनिक नहीं, बहुधा धर्म-उपदेशक हैं। यदि वे अतिथि सेवा या दान की प्रशंसा में कहेंगे, तो यह कहने की आवश्यकता नहीं समझेंगे कि यह कर्म क्यों शुभ है। वे प्राय: इस धारणा के साथ आरंभ करेंगे कि ये शुभ है। अनेक वक्ताओं के कथनों को एक साथ पढ़ने का एक लाभ यह है कि हम विषय का अध्ययन इसके विविध पक्षों में कर सकते हैं। कहा जाता है कि मृत्यु की तरह, धर्म के लिए भी सभी मनुष्य एक स्तर पर हैं, बड़े छोटे का यहां कोई भेद नहीं, सभी बुद्धिवंत प्राणी एक समान नैतिक नियम से बंधे हैं। परंतु मनुष्यों की योग्यता एक नहीं होती, न उन्हें एक ही स्थिति में काम करना होता है। नीति तीव्र रूप में मनुष्यों में भेद करती है। नर और नारी में भेद है, समाज में वर्ण-भेद है, व्यक्ति के जीवन में आश्रम भेद है। शास्त्र या नीति पर लिखने वाले मुझे क्या बता सकते हैंकि मैं विशेष स्थिति में क्या करूं? वे तो जानते ही नहीं कि मैं क्या हूं और किस स्थिति में मुझे काम करना है। जो कुछ वे कहेंगे, वह सामान्य धर्म की बाबत होगा या किसी श्रेणी के धर्म की बाबत। महाभारत में कहा है कि शास्त्रों के उपदेश उपलब्ध होने पर भी, व्यक्ति को अपने अनुभव और अनुमान का सहारा लेना होता है।

धर्म का स्वरूप : हम अपने आपको अगणित पदार्थों से घिरा पाते हैं, हम आप भी उनमें हैं। वे देश के विविध भागों में स्थित है, देश के जिस भाग को एक पदार्थ ने अपना बना लिया है, उसमें कोई दूसरा पदार्थ घुस नहीं सकता। इस तरह हम पदार्थों को एक दूसरे से अलग करते हैं। पदार्थों में गुण भेद भी होता है, उनके गुणों को जानकर ही हम उनका उचित प्रयोग कर सकते हैं। गुणों के अतिरिक्त क्रिया भी व्यापक दिखती है। प्राकृतिक वस्तुओं में प्रमुख क्रिया गति या स्थान-परिवर्तन है। इसका फल विविध पदार्थों की आपस की क्रिया और प्रतिक्रिया के रूप में प्रकट होता है। इनमें धर्म का स्थान कहां है? यह पदार्थ है, आचार का गुण है या विशेष प्रकार का कर्म आचरण है?

मनुष्यों की कल्पना गुणों को भी साकार रूप दे देती है, इससे साधारण मनुष्यों को भी अमूर्त गुणों का कुछ बोध हो जाता है। चित्रकार क्रोध, भय, प्रतीक्षा, सद्‌भाव के मनोरंजक चित्र प्रस्तुत करते हैं। धर्म की हालत में भी कल्पना ने ऐसा किया है।

धर्म मानव के रूप में : मनुष्य का अंतिम लक्ष्य पूर्णता की प्राप्ति है। इसके लिए अनेक जन्मों के प्रयत्न की आवश्यकता होती है। लक्ष्य की प्राप्ति पर प्रयत्न की आवश्यकता नहीं रहती और मनुष्य जन्म-मरण के चक्कर से छूट जाता है। धर्म को एक देवता माना गया है, परंतु महाभारत के अनुसार इसे भी जन्म लेना पड़ा। यह ऋषि माण्डव्य के शाप का फल था। वेदव्यास ने धृतराष्ट्र को कहा कि मानव जन्म में धर्म ने विदुर का शरीर धारण किया। उसने दक्ष की 10 कन्याओं का विवाह किया। इन कन्याओं के नाम हैं- कीर्त, लक्ष्मी, धृति, मेधा, पुष्टि, श्रद्धा, बुद्धि, लज्जा और मति। धर्मके के तीन पुत्र थे- शम, काम और हर्ष।

इस विवरण से हम क्या समझ सकते हैं? धर्म को एक शाप के फलस्वरूप जन्म लेना पड़ा, परंतु वह जन्म साधारण मनुष्य का जन्म तो नहीं हो सकता था। पति-पत्नी पर अधिकार रखता है। दक्ष की कन्याओं के नाम बताते हैं कि धर्म-मूर्ति मनुष्य की सम्पत्ति क्या होती है। किसी मनुष्य के

मनुष्यों की कल्पना गुणों को भी साकार रूप दे देती है, इससे साधारण मनुष्यों को भी अमूर्त गुणों का कुछ बोध हो जाता है। चित्रकार क्रोध, भय, प्रतीक्षा, सद्‌भाव के मनोरंजक चित्र प्रस्तुत करते हैं। धर्म की हालत में भी कल्पना ने ऐसा किया है। धर्म मानव के रूप में : मनुष्य का अंतिम लक्ष्य पूर्णता की प्राप्ति है। इसके लिए अनेक जन्मों के प्रयत्न की आवश्यकता होती है। लक्ष्य की प्राप्ति पर प्रयत्न की आवश्यकता नहीं रहती और मनुष्य जन्म-मरण के चक्कर से छूट जाता है। धर्म को एक देवता माना गया है, परंतु महाभारत के अनुसार इसे भी जन्म लेना पड़ा। यह ऋषि माण्डव्य के शाप का फल था। वेदव्यास ने धृतराष्ट्र को कहा कि मानव जन्म में धर्म ने विदुर का शरीर धारण किया। उसने दक्ष की 10 कन्याओं का विवाह किया। इन कन्याओं के नाम हैं- कीर्त, लक्ष्मी, धृति, मेधा, पुष्टि, श्रद्धा, बुद्धि, लज्जा और मति।

स्व में तीन पक्ष प्रमुख होते हैं-

1. प्राकृतिक स्व : इसमें उसका शरीर ही नहीं आता, अपितु वह सम्पत्ति भी जिसे वह अपना अंश ही समझने लगता है। इस सम्पत्ति में वह भाग विशेष महत्व रखता है, जिसे उसने अपने श्रम से कमाया है।

2. सामाजिक स्व : मनुष्य समाज में रहते हैं, हरेक व्यवहारमें दूसरों की बाबत कुछ राय कायम करता है। वह यह भी जानता है कि दूसरे भी उसकी बाबत अपनी राय कायम करते हैं। अपनी सम्पति की बाबत तो वह प्राय: यही समझता है कि वह युक्तियुक्त और ठीक है, उसकी बाबत दूसरे जो सम्मतियां बनाते हैं, वह उसके लिए चिंता का विषय होती है। हम स्वस्थ और धनी होना चाहते हैं, परंतु इससे भी अधिक यह चाहते हैं कि दूसरे हमें स्वस्थ और धनी समझें। एक प्रचलित कथन के अनुसार, कीर्ति महापुरुषों की अंतिम त्रुटि है।

3. आत्मिक स्व : इसमें तीन पक्ष है- ज्ञान, कर्म और भाव। अब देखें कि स्व के इन तीनों पक्षों में धर्म की स्थिति क्या थी। सम्पत्ति के संबंध में कहा गया है कि वह लक्ष्मी का पति था। कहा जाता है कि व्यापार में दयानतदारी सर्वोत्तम कर्म-विधि है। महाभारत में भी कहा है कि लक्ष्मी धर्म के अनुकूल आचरण करने से प्राप्त होती है। यदि अधर्म भी उसे खींच ले, तो वह अपने आपको अनुचित वातावरण में पाकर वहां से चल देती है।

सामाजिक स्व में धार्मिक पुरुष कीर्ति प्राप्त करता है, धर्म कीर्ति- पति है। भारत में तो महात्मा ही सबसे अधिक सम्मान का पात्र समझा जाता है। अब स्व के केंद्र, आत्मिक स्व, को लें। ज्ञान के संबंध में मेधा, बुद्धि और मति का वर्णन किया गया है। ज्ञान के तीन स्तर होते हैं, निम्न स्तर का ज्ञान विशेष वस्तु या

चेतना का दूसरापक्ष क्रिया है। क्रिया निरी गति नहीं, निद्रा में रक्त मेरे शरीर की नाड़ियों में घूमता रहता है, प्राण और अपान रुकते नहीं, परंतु इनमें कोई मेरी क्रिया नहीं। भौतिक क्रिया किसी विचार को साकार रूप देना है। मानसिक क्रिया में अंशों का संयोग-वियोग होता है। जीवन भर ये काम होते रहते हैं और कुछ लोगों के विचार में जीवन का मूल्य इसी बात से जानना चाहिए कि कितनी क्रिया उसमें एकत्रित की गयी है। विकासवादी स्पेंसर ने कहा था कि जीवन का उद्देश्य स्वयं जीवन है- लंबाई और चौड़ाई में। लंबाई तो इसी से पता लग जाती है कि मनुष्य कितनी देर जीता है, चौड़ाई का पता क्रियाओं की विविधता से लगता है। यजुर्वेद में कहा है कि मनुष्य को 100 वर्ष तक काम करते हुए जीने की इच्छा करनी चाहिए।

स्थिति का ज्ञान होता है। मैं एक गौ को देखता हूं या उसके शब्द को सुनता हूं। मेरे पास बैठा हुआ पुरुष भी उसे देखता और उसके शब्द को सुनता है। हमारे लिए यह कहना सम्भव नहीं कि दोनों देखने सुनने वाले जो कुछ देखते सुनते हैं, वह एक रूप होता है। दोनों के प्रभाव उनके अंदर बंद हैं और बाहर एक साथ रखे नहीं जा सकते। प्लेटो ने ऐसे ज्ञानको व्यक्ति की सम्मति का पद दिया है। उसके विचार में, गणित ऐसे ज्ञान से ऊंचे स्तर का ज्ञान देता है। रेखा-गणित में हम किसी विशेष त्रिकोण की बाबत चिंतन करते हैं, परंतु उसकी विशेषताएं हमारे चिंतन से असंगत होती है। बुद्धि बताती है कि जो कुछ एक त्रिकोण की बाबत देखा है, वह अन्य त्रिकोणों की बाबत भी मान्य है। गणित विशेष और सामान्य का मेल होता है। तत्व ज्ञान में प्लेटों के अनुसार, विशेष की उपेक्षा की जाती है और सामान्य ही चिंतन का विषय होता है। इस स्तर पर चिंतन शक्ति बुद्धि से भी ऊपर उठती है। धर्म की पत्नियों में मति, बुद्धि और मेधा का जिक्र है, धर्म इन तीनों का पति है। मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि महाभारत का वर्णन प्लेटों के वर्णन से मिलता-जुलता है। धार्मिक पुरुष को ज्ञान होता है, वह इंद्रियों की सहायता से विशेष वस्तुओं और स्थितियों को उनके यथार्थ रूप में देखता है, वह दृष्ट जगत की बाबत अनुमान कर सकता है, और अपनी उड़ान से दृष्ट-जगत से परे भी जा सकता है।

चेतना का दूसरापक्ष क्रिया है। क्रिया निरी गति नहीं, निद्रा में रक्त मेरे शरीर की नाड़ियों में घूमता रहता है, प्राण और अपान रुकते नहीं, परंतु इनमें कोई मेरी क्रिया नहीं। भौतिक क्रिया किसी विचार को साकार रूप देना है। मानसिक क्रिया में अंशों का संयोग-वियोग होता है। जीवन भर ये काम होते रहते हैं और कुछ लोगों के विचार में जीवन का मूल्य इसी बात से जानना चाहिए कि कितनी क्रिया उसमें एकत्रित की गयी है। विकासवादी स्पेंसर ने कहा था कि जीवन का उद्देश्य स्वयं जीवन है- लंबाई और चौड़ाई में। लंबाई तो इसी से पता लग जाती है कि मनुष्य कितनी देर जीता है, चौड़ाई का पता क्रियाओं की विविधता से लगता है। यजुर्वेद में कहा है कि मनुष्य को 100 वर्ष तक काम करते हुए जीने की इच्छा करनी चाहिए। ऐसा कर सकने के लिए दो बातों की आवश्यकता होती है-

1. मनुष्य में यह सब कुछ करने की शक्ति या क्षमता हो। 2. इस शक्ति के साथ मिली हुई संकल्प की दृढ़ता हो कि आलस्य और प्रमाद से बचकर शक्ति कापूरा प्रयोग करना है।

(शेष अगले अंक में) OO

आर्य समाज व आर्यवीर दल-कर्मवीर

ऋषि उद्यान, अजमेर

किसी भी परिवार, संस्था, समाज या राष्ट्र को उन्नत बनाने में युवाओं का विशेष योगदान रहता है। इसका कारण यह होता है कि युवाओं के अंदर उत्साह-सामर्थ्य-शक्ति अधिक होती है, जिसका अभाव बहुत छोटे बच्चों व वृद्धों में प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। युवाओं के अंदर किसी भी कार्य की दिशा व दशा बदलने की सामर्थ्य होती है, यदि युवा सचरित्र, समर्थ तथा निष्ठावान हों। यही कारण है कि आज हमारे देश के माननीय प्रधानमंत्री मोदी जी यह दावा करते हैं कि हम भारत को दुनिया के शिखर पर ले जा सकते हैं, क्योंकि पूरे संसार में अन्य देशों की तुलना में भारत के पास सबसे अधिक युवाशक्ति है।

यदि इस युवाशक्ति को ठीक मार्ग-दर्शन दिया जाय तो अवश्य ही भारत विश्व के श्रेष्ठतम देशों में होगा। जिसके पास युवा शक्ति कम होती है, उसका भविष्य अंधकार में जाने की सभावना रहती है, क्योंकि युवा कार्यकर्ताओं के अभाव में विशेषत: सैन्य व तकनीकी के क्षेत्र में तो उनकी सुरक्षा पर प्रश्न-चिह्न लगने लगते हैं। परिवार-समाज-राष्ट्र के पास सपत्ति हो, पर सुरक्षा की सामर्थ्य न हो तो उनकी सम्पदा पर विरोधियों की नियत खराब होने लगती है। कुछ ऐसी ही स्थिति वर्तमान में आर्य समाज की है।

आर्य समाज ने भी अपने को सशक्त-समर्थ-सुरक्षित रखने के लिए युवा इकाई के रूप में आर्यवीर दल संगठन को बनाया। आर्यवीर दल की पहचान आर्य समाज के सैनिक संगठन के रूप में हुई। आर्यवीर दल ने आर्य समाज के नेतृत्व में आर्य समाज की ही नहीं, अपितु आवश्यकता पड़ने पर अपनी सामर्थ्य/शक्ति के अनुसार सपूर्ण समाज, राष्ट्र एवं हिन्दू जाति की सेवा-सुरक्षा की। देश विभाजन के समय जो हिन्दू शरणार्थी पूर्वी पाकिस्तान से आये, मुस्लिम अंसार गुंडे उन पर आक्रमण करते, मारने व लूटने का यत्न करते। इस विपत्ति के समय आर्यवीर दल ने हिन्दू शरणार्थियों की सुरक्षा की उनकी सपत्ति को बचाया। हिन्दुओं के गंगा-यमुना इत्यादि तीर्थ स्थलों पर मेले लगते। उनमें मुस्लिम युवक हिन्दू महिलाओं के साथ छेड़खानी करते, तो उनकी सुरक्षा के लिए आर्यवीरों को दायित्व दिया जाता था। हैदराबाद मुक्तिसंग्राम में आर्यवीरों का विशेष सहयोग, बलिदान रहा, क्योंकि आर्यवीरों को आर्य समाज के द्वारा धर्म-राष्ट्र की रक्षा के लिए सज्जित किया जाता था। वर्तमान में भी आर्य समाज के बड़े सम्मेलनों में व्यवस्था व सुरक्षा की जिमेदारी आर्यवीर दल को ही दी जाती है।

जिन आर्य समाजों में आर्यवीर दल सक्रिय है, उन आर्य समाजों की गतिविधि व शोभा अलग ही दिखाई देती है। वहां के कार्यक्रमों की व्यवस्था-सुरक्षा व व्यायाम प्रदर्शन आदि का लोगों के मस्तिष्क पर विशेष प्रभाव पड़ता है। भारत के अनेक प्रांतों में आर्य समाज के साथ-साथ आर्यवीर दल का कार्य रहा है, इन्हीं प्रान्तों में वीरभूमि राजस्थान भी अग्रणी है। राजस्थान की आर्य समाजों में आर्यवीर दल की विशेष भूमिका है। आर्यवीर दल गंगापुर सिटी ने आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में बड़ी भूमिका निभाई है। यहां का आर्यवीर दल संगठन बड़ा जागरूक है। वर्तमान में भी इस नगर में आर्यवीर दल की दो शाखाएं सतत् कार्य कर रही हैं, यहां के शिक्षक व आर्यवीर बड़े योग्य व उत्साही हैं। शाखाओं में आने

आर्य समाज के बड़े सम्मेलनों में व्यवस्था व सुरक्षा की जिमेदारी आर्यवीर दल को ही दी जाती है। जिन आर्य समाजों में आर्यवीर दल सक्रिय है, उन आर्य समाजों की गतिविधि व शोभा अलग ही दिखाई देती है। वहां के कार्यक्रमों की व्यवस्था-सुरक्षा व व्यायाम प्रदर्शन आदि का लोगों के मस्तिष्क पर विशेष प्रभाव पड़ता है। भारत के अनेक प्रांतों में आर्य समाज के साथ-साथ आर्यवीर दल का कार्य रहा है, इन्हीं प्रान्तों में वीरभूमि राजस्थान भी अग्रणी है। राजस्थान की आर्य समाजों में आर्यवीर दल की विशेष भूमिका है। आर्यवीर दल गंगापुर सिटी ने आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में बड़ी भूमिका निभाई है। यहां का आर्यवीर दल संगठन बड़ा जागरूक है। वर्तमान में भी इस नगर में आर्यवीर दल की दो शाखाएं सतत् कार्य कर रही हैं, यहां के शिक्षक व आर्यवीर बड़े योग्य व उत्साही हैं। शाखाओं में आने वाले आर्यवीरों को शारीरिक रूप से सुदृढ़ किया जाता है, वहीं पर उनको योग्य आर्य भद्र पुरुषों द्वारा जीवन की उन्नति के लिए प्रेरित किया जाता है। जिसका परिणाम यह रहा कि शाखाओं में आने वाले दो-तीन आर्यवीरों ने राजस्थान की बोर्ड परीक्षाओं में भी उच्च स्थान प्राप्त किया। आर्य वीर दल गंगापुर सिटी के मुय प्रेरणा स्रोत माननीय मदनमोहन जी व उनके समस्त सहयोगी हैं।

वाले आर्यवीरों को शारीरिक रूप से सुदृढ़ किया जाता है, वहीं पर उनको योग्य आर्य भद्र पुरुषों द्वारा जीवन की उन्नति के लिए प्रेरित किया जाता है। जिसका परिणाम यह रहा कि शाखाओं में आने वाले दो-तीन आर्यवीरों ने राजस्थान की बोर्ड परीक्षाओं में भी उच्च स्थान प्राप्त किया। आर्य वीर दल गंगापुर सिटी के प्रेरणा स्रोत माननीय मदनमोहन जी व उनके समस्त सहयोगी हैं।

मदन मोहन जी ने अपना पूरा जीवन आर्य समाज व आर्यवीर दल की सेवा में लगाया है। आप एक निर्भीक व दृढ़ आस्थावान आर्य पुरुष है। आपकी छत्रछाया में आर्यवीर दल गंगापुर शहर कार्य करता है। प्रत्येक वर्ष दशहरा पर्व पर आर्यवीर दल द्वारा भव्य कार्यक्रम किया जाता है। जिसमें आर्यवीरों द्वारा व्यायाम प्रदर्शन होता है। शहर के अनेक स्त्री-पुरुष इस कार्यक्रम को देखने आते हैं। कार्यक्रम में एक विशेष कार्य यह किया जाता है कि दर्शक तथा कार्यकर्ता संगठन के लिए वीरनिधि एकत्र करते हैं। अपनी स्वेच्छा से लोग इसमें सहयोग करते हैं। यह इस नगर की वर्षों पुरानी परम्परा है। आर्य वीर दल गंगापुर सिटी के 15 वर्ष के घोर संघर्ष के उपरान्त उच्च न्यायालय राजस्थान के आदेशानुसार नगर के बीच में पड़ने वाली 26 दुकानें पिछले वर्ष बंद करा दी गई। इसका सारा श्रेय आर्यवीर दल व उसके नेता मदनमोहन जी को जाता है। आपने धैर्य नहीं छोड़ा और 15 वर्ष तक केस लड़ते रहे, अंततः सफलता प्राप्त हुई। ये हम सब आर्य जनों के गौरव पूर्ण कार्य है। शहर में मुस्लिमों की संख्या भी पर्याप्त है। यहां कई घटनाएं ऐसी हुईं, जो हिन्दू युवतियां मुस्लिम युवकों के साथ चली गई, परंतु उनका वैदिक रीति से विवाह संस्कार आर्य समाज ने कराया। इसी कारण से नगर के सभी पौराणिक लोग भी मदनमोहन जी का बहुत सम्मान करते हैं तथा आर्य समाज व आर्य वीर दल को मुक्त हस्त से दान देते हैं। आपकी आयु लगभग 70 वर्ष है, परन्तु आपका उत्साह अभी भी युवकों जैसा है, इसीलिए आप सैंकड़ों योग्य आर्य वीरों के प्रेरणा स्रोत रहे।

इसी गंगापुर शहर ने दिवंगत सीताराम जी जैसे कर्मठ आर्यवीर को तैयार किया। इतना कुछ लिखने का उद्देश्य/प्रयोजन यह है कि आर्य समाज व आर्यवीर दल का माता-पिता व संतान जैसा संबंध है। संतान योग्य व समर्थ तथा संस्कारवान होती है तो माता-पिता की उन्नति-प्रगति, यश-प्रशंसा व सुरक्षा होती है। दुर्भाग्य से कुछ आर्य समाज के कथित पदाधिकारी गण आर्य समाज को अलग व आर्यवीर दल को अलग मानने लगे तथा आर्य वीर दल का विरोध करने लगे। आर्यवीरों के आर्य समाज में प्रवेश पर प्रतिबंध लगाने लगे। इसका कारण रहा सपत्ति। जो अधिकारी आर्यसमाज के धन सपत्ति का मनमाने ढंग से उपभोग करते, आर्यवीर दल द्वारा विरोध किये जाने के भय से ऐसे आर्यवीर दल का बहिष्कार किया विरोध किया, ताकि वे निरंकुश होकर स्वार्थ सिद्धि कर सके। कुछ दोष आर्यवीर दल का भी हो सकता है, परन्तु यदि सन्तान पथ से विचलित हो जाए तो उसको सही मार्ग दिखाने का दायित्व माता-पिता का होता। ऐसा ही दायित्व आर्य समाज का आर्यवीर दल के प्रति है। जिस घर में संतान नहीं होती, उस गृहस्थ की सपत्ति पड़ोसियों की नजर टेढ़ी होने लगती है तथा जिसकी संतान योग्य हो बलवान हो, ऐसे गृहस्थ सुख चैन से जीवन व्यतीत करते हैं। आर्य समाजों में युवकों को जोड़ने अपनी संख्या को बढ़ाने और न्यून खर्च में अच्छी सफलता प्राप्त करने का आर्यवीर दल एक उत्तम प्रक्रम है।

हम सब आर्यभद्र पुरुषों का कर्तव्य है कि आर्य समाज की प्रत्येक संस्था में आर्य वीर दल की शाखाएं चले, सब आर्य परिवारों के बच्चे शाखाओं में अनिवार्य रूप से भाग लें तथा आर्य जन उनको उत्तम चरित्र की शिक्षा दें, तो आर्य परिवारों के बच्चों को यह नहीं कहना पड़ेगा कि मेरे दादा-नाना आर्य समाजी थे। ऋषि भूमि परोपकारिणी सभा में अनेक युवक परीक्षा के निमित्त आकर ठहरते हैं। कोई भी युवक एक बार यह कह दे कि मैं आर्य समाज से आया हूं, आर्य समाज से पत्र लाये न लाये, परन्तु सभी के अधिकारियों की उदारता है कि सभा द्वारा सबके भोजन-आवास की समुचित व्यवस्था की जाती है। ○○

प्रेरक विचार

- धर्म युक्त सत्य भाषण करना और मिथ्या भाषादि अधर्म को छोड़ देना ही मुक्ति का साधन है।
- एकाग्र मन से किये गए कार्य हमेशा सफल होते हैं।
- आलस्य मनुष्य के भाग्य को निगल जाता है। पुरुषार्थ से ही मनुष्य भाग्यशाली बनता है। अतः कहा भी है- पुरुषार्थ ही इस दुनिया में सब कामना पूर्ण करता है। मन चाहा फल उसने पाया जो आलसी बन के पड़ा न रहा।
- अपनी वाणी पर संयम करने वाला इंद्रियों को वश में कर लेता है।
- मनुष्य जीवन को सार्थक बनाने के लिए प्रातः-सायं यथा सामर्थ्य गायत्री मंत्र का जाप अवश्य किया करें।

ईश्वर की उपासना संस्कृत में क्यों

ईश्वर की उपासना हम सभी को नियमित करनी चाहिए। ईश्वर की उपासना के संबंध में मन में कई प्रकार के प्रश्न उठते हैं कि ईश्वर की उपासना, भक्ति, संध्या संस्कृत में क्यों हिंदी में क्यों नहीं। हमारी मातृ भाषा हिंदी मानी जाती है जो कि लोक में सबसे ज्यादा बोली जाती है। उसमें ईश्वर की उपासना करनी चाहिए लेकिन वेद के मंत्र तो संस्कृत में हैं तो हिंदी भाषा में सम्भव नहीं है।

आर्यवर्त देश की मातृभाषा संस्कृत ही थी। सभी जनमानस संस्कृत भाषी थे। परमात्मा द्वारा वेदरूपी उपदेश मानव मात्र के कल्याण के लिए संस्कृत भाषा में चार ऋषियों- अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा को दिया गया है। वेद में ईश्वर की उपासना संध्या, हवन आदि मानव मात्र कल्याण की सामग्री वेद रूप में दी। जिससे मनुष्य श्रेष्ठ कार्यों को करके अपने जीवन को भक्तिमय बना सकता है। हमारा देश हजारों वर्ष गुलाम रहा। गुलामी के कारण हमारी संस्कृति को नष्ट किया गया। हमारे साहित्य को जो कि संस्कृत (देव भाषा) में यह सभी नष्ट कर दिया गया। इसके बाद भी हमारी सांस्कृतिक धरोहर महापुरुषों के द्वारा पुन: प्रदान की गई और वेद मार्ग के अनुगामी बने।

हम सभी को यह ध्यान रखना चाहिए कि वेदरूप में देववाणी संस्कृत में प्राप्त ईश्वर उपदेश उसकी उपासना के लिए सबसे उत्तम है। इसलिए ईश्वर की उपासना हमें संस्कृत भाषा में ही करनी चाहिए, अन्य किसी भाषा में नहीं। हम आज भी देखते हैं कि लोक में कुछ शब्द आज भी संस्कृत के बोले जाते हैं। इससे ज्ञात होता है कि संस्कृत हमारी प्राचीन समय से मातृभाषा रही है। हम सभी मातृभाषा को अपनायें और संस्कृत भाषी बनें।

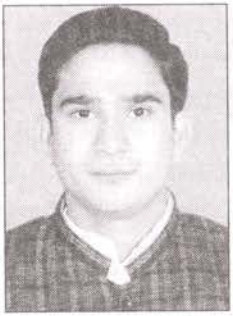

ओमकार शास्त्री
संस्कृत प्रवक्ता, आर्ष गुरुकुल, नोएडा

आर्यवर्त देश की मातृभाषा संस्कृत ही थी। सभी जनमानस संस्कृत भाषी थे। परमात्मा द्वारा वेदरूपी उपदेश मानव मात्र के कल्याण के लिए संस्कृत भाषा में चार ऋषियों- अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा को दिया गया है। वेद में ईश्वर की उपासना संध्या, हवन आदि मानव मात्र कल्याण की सामग्री वेद रूप में दी। जिससे मनुष्य श्रेष्ठ कार्यों को करके अपने जीवन को भक्तिमय बना सकता है।

गायत्री महाविज्ञान

गायत्री वह दैवी शक्ति है जिससे सम्बन्ध स्थापित करके मनुष्य अपने जीवन विकास के मार्ग में बड़ी सहायता प्राप्त कर सकता है। परमात्मा की अनेक शक्तियां हैं, जिनके कार्य और गुण पृथक् पृथक् हैं। उन शक्तियों में गायत्री का स्थान बहुत ही महत्वपूर्ण है। यह मनुष्य को सद्बुद्धि की प्रेरणा देती है। गायत्री से आत्मसम्बन्ध स्थापित करने वाले मनुष्य में निरन्तर एक ऐसी सूक्ष्म एवं चैतन्य विद्युत् धारा संचरण करने लगती है, जो प्रधानतः मन, बुद्धि, चित्त और अन्त:करण पर अपना प्रभाव डालती है। बौद्धिक क्षेत्र के अनेकों कुविचारों, असत् संकल्पों, पतनोन्मुख दुर्गुणों का अन्धकार गायत्री रूपी दिव्य प्रकाश के उदय होने से हटने लगता है। यह प्रकाश जैसे-जैसे तीव्र होने लगता है, वैसे-वैसे अन्धकार का अन्त भी उसी क्रम से होता जाता है। मनोभूमि को सुव्यवस्थित, स्वस्थ, सतोगुणी एवं सन्तुलित बनाने में गायत्री का चमत्कारी लाभ असंदिग्ध है और यह भी स्पष्ट है कि जिसकी मनोभूमि जितने अंशों में सुविकसित है, वह उसी अनुपात में सुखी रहेगा, क्योंकि विचारों से कार्य होते हैं और कार्यों के परिणाम सुख-दु:ख के रूप में सामने आते हैं। जिसके विचार उत्तम हैं, वह उत्तम कार्य करेगा, जिसके कार्य उत्तम होंगे, उसके चरणों तले सुख-शान्ति लोटती रहेगी। गायत्री उपासना द्वारा साधकों को बड़े-बड़े लाभ प्राप्त होते हैं।

अध्यात्म आखिर है क्या : मनुष्य को इस सांसारिक जीवन की सफलता के लिए दो चीजों की आवश्यकता है- पहला है श्रम और दूसरा ज्ञान। श्रम के द्वारा हम मेहनत करते हैं, मजदूरी करते हैं तथा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करके संतोष महसूस करते हैं। दूसरी चीज है, ज्ञान। ज्ञान का विकास मनुष्य के श्रम द्वारा होता है तथा उसके बाद मनुष्य की उन्नति होती है। सांसारिक जीवन में श्रम और ज्ञान दोनों की आवश्यकता है। श्रम हमारे पास हो और ज्ञान न हो तो हमारी भौतिक प्रगति, भौतिक संपदा नगण्य होती है, परंतु जब ज्ञान मनुष्य के पास होता है, तो वह इंजीनियर होता है, डॉक्टर होता है, कलाकार होता है। ज्ञान के द्वारा ही हमारा विकास होता है तथा हमारे विचार में परिवर्तन होता है। अत: हमको सांसारिक प्रगति के लिए श्रम को विकसित करना चाहिए। ○○

विद्वान् सर्वत्र पूज्यते

डॉ. शिव प्रसाद शर्मा

नानाविध विचारपूरिते जगतीतले सर्वेषामेव प्राणिनां नैसर्गिकी प्रवृत्तिः प्रचरति यत् सर्व एव जना माम् आदरभावनया पश्येयुः, मदीयं सत्कारं कुर्युः, न कश्चिदपि श्रेष्ठोऽपि मत्तिरस्कृतिं कुर्यात्। सर्वेप्सितस्य सत्कार-शाखिनो मूलं गुणगणमेव, नात्र कस्यचिदपि विप्रतिपत्तिः। विद्यैव च वर्तते गुणग्रामस्य स्वाभाविकी सहजा कुलजा च सुरतिः वसतिः। अत एव च विद्यैव वर्तते पूजायाः सत्कारस्य समादरस्य च कारणीभूता।

धनं रूपं वा कदाचिदेव सम्मान-निदानम्: नहि तस्य विश्वजनीनता विद्यते। सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति, इति दिशा धनमेव मानकारणम् इति कथयतः पृच्छामो वयं यद् याज्ञवल्क्य-काले, शंकराचार्य-समये,चाणक्यं-काले वा के जना आसन् धनवन्तः। तेषां नामान्यपि सम्प्रति न श्रूयन्ते; परंतु विदुषां नामानि निर्बाधम् अद्यावधि श्रुति-सत्कारम् कुर्वन्ति। एतेनैव निदर्शनेन तत्वमिदं सिद्धिम् एति यद् यद्यपि धनमपि वर्तते माननिदानम् तदपि तद्देश-काल-परिस्थितिभिः अवरुद्धमेव; किंतु विद्यानिमित्तस्य सम्मानस्य परिधिः देशकालादिभिः अनवरुद्धं विद्यते।

किञ्च, संसारेऽस्मिन् सन्ति सहस्रशः तादृशा महापुरुषाः ये धनं तृणमिव मन्यंते, सत्यापेक्षया धर्मपेक्षया वा नास्ति मनागपि धनस्य महत्वं तेषां मनसि, तेऽपि विद्याया महत्वं मन्यंत एव। अत एव धनापेक्षया वर्तते विद्याया अधिकं महत्वम्। न केवलं धनिकापेक्षया, अपि तु सर्वविध-शक्ति-सम्पन्नानां नृपाणाम् अपेक्षया अपि विदुषां श्रेष्ठत्वम् उक्तं श्रीमता चाणक्येन-

विद्वत्त्वञ्च नृपत्वञ्च नैव तुल्यं कदाचन।
स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते।।

धनिकापेक्षया विदुषो मानाधिक्यस्य कारणं विद्या एव वरीवर्त्ति। नहि विद्याधनं प्राकृतधनवद् हार्यं विभाज्यं नश्वरं वा भवति, तत्तु, अक्षयम्, अविभाज्यम्, अहार्यं च वर्तते।

कस्यचिद् राष्ट्रस्य समाजस्य वा समुन्नतिः न केवलं धनेन कर्तुं शक्यते; किन्तु विद्वद्भिः बुद्धिबलेनैव सा सम्पादयितुं शक्या। तस्मादेव देशे समाजे व विदुषां स्थानम् अनुपमम् एव। भारतवर्षे तु सदैव विदुषां पूजा सम्मानञ्च विधीयते।

उपनिषत्काले सर्वशक्ति-सम्पन्नेन महाराजेन अश्वपतिना अन्यैरपि राजभिः समागतानां विदुषां रैक्वादीनां ब्रह्मवादिनां च सम्मानम् अद्वितीयमेव निदर्शनम्। एवमेव विद्वत्सेवकेन मिथिलाधिपेन ब्रह्म-विद्या-रसिकेन श्रीजनकेनापि महात्मनो विद्यानिधेः याज्ञवल्क्यस्य बहुधा ससम्मानं पूजनं श्रूयत एव। पुराणेषु च तादृशा पावनाः प्रसङ्गा बहुधा समायान्ति, येषु शारीरिकशक्तेः सम्पत्तेः साम्राज्यस्य प्राज्यस्य राज्यस्य वा अधिपतयोऽपि विदुषां सम्मानं प्रदर्शयन्तो विद्याया गौरवं समुद्घोषयन्ति।

महाराज दशरथस्य वशिष्ठसमर्चनं विद्यासमर्चनमेव। लोकभद्रेण श्रीरामभद्रेण वनवास-काले निष्किञ्चनानां तपोविद्यानिधीनां विदुषां महात्मनाञ्च यादृशं महत्त्वम् उपदर्शितं तत्साम्यन्तु न कुत्रापि विलोक्यते। ज्ञानं भारः क्रियां बिना इति वचनानुसारं त एव विद्वासो ये विद्याम् अधिगत्य तया तत्त्वदर्शनं विधाय लोकशिक्षार्थं तादृशान् एव सदाचारान् पालयन्तो जीवनम् अतिबाहयन्ति वशिष्ठ-वाल्मीकि-प्रभृतयो महात्मानः अस्याम् एव सरणौ सरन्तो दृश्यन्ते।

एवमेव वर्तमानेऽपि काले सर्वेषु विदुषां सम्मानस्य परिपाटी प्रचलति। नोबेल इत्यादयः पुरस्काराः तस्य प्रकारभेदा एव। एभिः देश-जाति-परिधिमुक्ताः तद्विषय-विशेषज्ञाः सत्कार-भाजनानि विधीयन्ते। भारतीय सर्वकारेणापि समये-समये तत्तद्विशेष-विदुषां तत्तद्रीत्या पुरस्कारादि-विधानोः परिपाल्यते प्राक्तनीयं पावनी परम्परा।

पर्यालोचनेन इदमेव निश्चीयते यद् विदुषः सम्मानं सर्वैरेव सवत्र सर्वथा च क्रियते। अत एवैषा सूक्तिः यथाथैवेति यद्- **विद्वान सर्वत्र पूज्यते।** OO

- **'यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म' : यज्ञ श्रेष्ठतम कर्म है, क्योंकि इससे जल, वायु, वातावरण इत्यादि की शुद्धि होती है।**
- **'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः'- यज्ञ सृष्टि का सही संतुलन बनाने वाला है।** - *शतपथ ब्राह्मण*
- **नौर्हवा वै स्वर्ग्या यदग्निहोत्रम्' : अग्निहोत्र स्वर्ग की नौका है।** - *शतपथ ब्राह्मण*
- **जितनाघृत व सुगंधादित पदार्थ एक मनुष्य खाता है, उतने द्रव्य के होम से, लाखों मनुष्यों का उपकार होता है।**

- सत्यार्थ प्रकाश

नेताजी : सुभाषचन्द्र बोस

पुण्यतिथि : 18 अगस्त
पर शत्-शत् नमन

सुभाष चन्द्र बोस (जन्म : 23 जनवरी 1897, मृत्यु : 18 अगस्त 1945) जो नेता जी के नाम से भी जाने जाते हैं, भारत के स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी नेता थे। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान, अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने के लिये, उन्होंने जापान के सहयोग से आज़ाद हिन्द फौज का गठन किया था। उनके द्वारा दिया गया 'जय हिन्द' का नारा भारत का राष्ट्रीय नारा बन गया है। 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हे आजादी दूंगा' का नारा भी उनका था जो उस समय अत्यधिक प्रचलन में आया। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि जब नेता जी ने जापान और जर्मनी से मदद लेने की कोशिश की थी तो ब्रिटिश सरकार ने अपने गुप्तचरों को 1941 में उन्हें ख़त्म करने का आदेश दिया था। नेता जी ने 5 जुलाई 1943 को सिंगापुर के टाउन हाल के सामने 'सुप्रीम कमांडर' के रूप में सेना को संबोधित करते हुए दिल्ली चलो! का नारा दिया और जापानी सेना के साथ मिलकर ब्रिटिश व कामनवेल्थ सेना से बर्मा सहित इम्फाल और कोहिमा में एक साथ जमकर मोर्चा लिया। 21 अक्टूबर 1943 को सुभाष बोस ने आजाद हिन्द फौज के सर्वोच्च सेनापति की हैसियत से स्वतन्त्र भारत की अस्थायी सरकार बनायी जिसे जर्मनी, जापान, फिलीपींस, कोरिया, चीन, इटली, मांचुको और आयरलैंड ने मान्यता दी। नेताजी की मृत्यु को लेकर आज भी विवाद है। जापान में प्रतिवर्ष 18 अगस्त को उनका शहीद दिवस धूमधाम से मनाया जाता है वहीं भारत में रहने वाले उनके परिवार के लोगों का आज भी यह मानना है कि सुभाष की मौत 1945 में नहीं हुई। वे उसके बाद रूस में नज़रबंद थे।

पं इन्द्र विद्यावाचस्पति

पुण्यतिथि : 23 अगस्त
पर शत्-शत् नमन

इन्द्र विद्यावाचस्पति का जन्म 9 नवम्बर 1889 को पंजाब के जालंधर जिले के नवां शहर में हुआ था। उनकी शिक्षा-दीक्षा गुरुकुल कांगड़ी में हुई। अध्ययन के समय ही उन्हें सद्धर्म प्रचारक के सम्पादन का मौका मिला। यहीं से उनकी प्रवृति पत्रकारिता की ओर गयी। अपने जीवनकाल में उन्होंने विजय, वीर अर्जुन तथा जनसत्ता का सम्पादन किया। 'विजय' दिल्ली से प्रकाशित होने वाला पहला हिन्दी समाचार पत्र था। इनका देहावसान 23 अगस्त 1960 को दिल्ली में हुआ। इन्द्र जी ने शिक्षा तथा साहित्य सृजन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। शिक्षा के क्षेत्र में उनका सबसे महत्वपूर्ण योगदान गुरुकुल कांगड़ी का संचालन एवं मार्गदर्शन है। इस विश्वविद्यालय के कुलाधिपति के रूप में कार्य करते हुए उन्होंने गुरुकुल की उपाधियों को केन्द्र एवं राज्य सरकारों से मान्यता प्रदान कराने का स्तुत्य एवं सफल कार्य किया। गुरुकुल में हिन्दी माध्यम से तकनीकी विषयों की शिक्षण की व्यवस्था करके इन्होंने हिन्दी की अमूल्य सेवा की। ये इतिहास के गंभीर अध्येता थे। अत: इनकी इतिहास-विषयक रचनाएं अत्यन्त प्रामाणिक एवं उच्च श्रेणी की मानी गयीं हैं। भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का उदय और अन्त, मुगल साम्राज्य का क्षय और उसके कारण, मराठों का इतिहास उनकी सर्वप्रसिद्ध रचनाएं हैं।

पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय

पुण्यतिथि : 23 अगस्त
पर शत्-शत् नमन

पंडित गंगा प्रसाद उपाध्याय आर्य समाजी लेखक थे। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में मेरठ कॉलेज के प्रोफेसर और गढ़वाल जिले के तेहरी में मुख्य न्यायाधीश के रूप में कार्य किया, जिसमें से वह आर्य समाज पूर्णकालिक सेवा करने के लिए सेवानिवृत्त हुए। आर्यसमाज के लब्धप्रतिष्ठ लेखक, दार्शनिक तथा साहित्यकार पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय का जन्म 6 सितमबर 1881 को एटा जिले के नदरई नामक ग्राम में श्री कुंज बिहारीलाल के यहां हुआ। इन्होंने अंग्रेजी तथा दर्शनशास्त्र में क्रमश: 1908 तथा 1912 में किया। प्रारंभ में कुछ समय तक राजकीय स्कूलों में अध्यापन किया किंतु 1918 में वहां से त्यागपत्र देकर डीएवी हाई स्कूल इलाहाबाद में मुख्याध्यापक के पद पर आ गये। 1936 में इस कार्य से अवकाश लेने के पश्चात उपाध्याय जी ने सम्पर्ण जीवन को आर्य समाज के लिए ही समर्पित कर दिया। वे आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान पद पर 1941 से 1944 पर्यंत रहे। तत्पश्चात सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान (1943) तथा मंतरी (1946-1951) भी रहे। इसी बीच आप धर्म प्रचारार्थ दक्षिण अफ्रीका, थाईलैंड व सिंगापुर गये। 1959 में दयानन्द दीक्षा शताब्दी के अवसर पर मथुरा में तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की अध्यक्षता में आपका सार्वदेशिक अभिनंदन किया गया तथा अभिनंदन ग्रंथ भेंट किया गया। अत्यंत वृद्ध हो जाने पर भी आप निरंतर अध्यन व लेखन में लगे रहे। 29 अगस्त 1968 को आपका निधन हो गया।

15 अगस्त : स्वतंत्रता दिवस

सदियों की गुलामी के पश्चात 15 अगस्त 1947 के दिन आजाद हुआ। पहले हम अंग्रेजों के गुलाम थे। उनके बढ़ते हुए अत्याचारों से सारे भारतवासी त्रस्त हो गए और तब विद्रोह की ज्वाला भड़की और देश के अनेक वीरों ने प्राणों की बाजी लगाई, गोलियां खाईं और अंततः आजादी पाकर ही चैन लिया। इस दिन हमारा देश आजाद हुआ, इसलिए इसे स्वतंत्रता दिवस कहते हैं। अंग्रेजों के अत्याचारों और अमानवीय व्यवहारों से त्रस्त भारतीय जनता एकजुट हो इससे छुटकारा पाने हेतु कृतसंकल्प हो गई। सुभाषचंद्र बोस, भगतसिंह, चंद्रशेखर आजाद ने क्रांति की आग फैलाई और अपने प्राणों की आहुति दी। तत्पश्चात सरदार वल्लभभाई पटेल, गांधीजी, नेहरूजी ने सत्य, अहिंसा और बिना हथियारों की लड़ाई लड़ी। सत्याग्रह आंदोलन किए, लाठियां खाईं, कई बार जेल गए और अंग्रेजों को हमारा देश छोड़कर जाने पर मजबूर कर दिया। इस तरह 15 अगस्त 1947 का दिन हमारे लिए 'स्वर्णिम दिन' बना। हम, हमारा देश स्वतंत्र हो गए। यह दिन 1947 से आज तक हम बड़े उत्साह और प्रसन्नता के साथ मनाते चले आ रहे हैं। इस दिन सभी विद्यालयों, सरकारी कार्यालयों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है, राष्ट्रगीत गाया जाता है और इन सभी महापुरुषों, शहीदों को श्रद्धांजलि दी जाती है जिन्होंने स्वतंत्रता हेतु प्रयत्न किए। मिठाइयां बांटी जाती हैं। हमारी राजधानी दिल्ली में हमारे प्रधानमंत्री लाल किले पर राष्ट्रीय ध्वज फहराते हैं। वहां यह त्योहार बड़ी धूमधाम और भव्यता के साथ मनाया जाता है। सभी शहीदों को श्रद्धांजलि दी जाती है। प्रधानमंत्री राष्ट्र के नाम संदेश देते हैं। अनेक सभाओं और कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इस दिन का ऐतिहासिक महत्व है। इस दिन की याद आते ही उन शहीदों के प्रति श्रद्धा से मस्तक अपने आप ही झुक जाता है जिन्होंने स्वतंत्रता के यज्ञ में अपने प्राणों की आहुति दी। इसलिए हमारा पुनीत कर्तव्य है कि हम हमारे स्वतंत्रता की रक्षा करें। देश का नाम विश्व में रोशन हो, ऐसा कार्य करें। देश की प्रगति के साधक बनें न कि बाधक। घूस, जमाखोरी, कालाबाजारी को देश से समाप्त करें। भारत के नागरिक होने के नाते स्वतंत्रता का न तो स्वयं दुरुपयोग करें और न दूसरों को करने दें। एकता की भावना से रहें और अलगाव, आंतरिक कलह से बचें। हमारे लिए स्वतंत्रता दिवस का बड़ा महत्व है।

श्रावणी पर्व की महत्ता : डॉ विवेक आर्य

श्रवण नक्षत्र से युक्त पूर्णिमा को रक्षाबंधन का पर्व आयोजित किया जाता है। इसीलिए श्रावणी भी कहते हैं। सावन मास श्रावण का परिवर्तित नाम है। इस मास की वैदिक महत्ता ऋषि मुनियों के समय से प्रचलित है। विक्रमी संवत के अनुसार श्रावण पांचवा मास है। प्राचीन काल में श्रवण मास को जीवन का अभिन्न अंग समझा जाता था। कालांतर में विदेशी संस्कृति के प्रचार से जनमानस इसे भूल गया है। श्रावणी पर्व के तीन लाभ है- आध्यात्मिक, वैज्ञानिक एवं सामाजिक।

आध्यात्मिक पक्ष : श्रावण का अर्थ होता है जिसमें सुना जाये। अब सुना किसे जाता है। संसार में सबसे अधिक महत्वपूर्ण ईश्वरीय ज्ञान वेद है। इसलिए इस मास में वेदों को सुना जाता है। श्रावण में गर्मी के पश्चात वर्षा आरम्भ होती है। वर्षा में मनुष्य को राहत होती है। चित वातावरण के अनुकूल होने के कारण शांत हो जाता है। मन प्रसन्न हो जाता है। वर्षा होने के कारण मनुष्य अधिक से अधिक समय अपने घर पर व्यतीत करता है। ऐसे अवसर को हमारे वैज्ञानिक सोच रखने वाले ऋषियों ने वेदों के स्वाध्याय, चिंतन, मनन एवं आचरण के लिए अनुकूल माना। इसलिए श्रावणी पर्व को प्रचलित किया। वेदों के स्वाध्याय एवं आचरण से मनुष्य अपनी आध्यात्मिक उन्नति करे। यही श्रावणी पर्व का आध्यात्मिक प्रयोजन है।

वैज्ञानिक पक्ष : श्रावण में वर्षा के कारण कीट, पतंगे से लेकर वायरस, बैक्टीरिया सभी का प्रकोप होता हैं। इससे अनेक बीमारियां फैलती है। प्राचीन काल से अग्निहोत्र के माध्यम से बिमारियों को रोका जाता था। श्रावण मास में वेदों के स्वाध्याय के साथ साथ दैनिक अग्निहोत्र का विशेष प्रावधान किया जाता है। इसीलिए वेद परायण यज्ञ को इसमें सम्मिलित किया गया था। इससे न केवल श्रुति परम्परा को जीवित रखते वाले वेद-पाठी ब्राह्मणों का संरक्षण होता है अपितु वेदों के प्रति जनमानस की रुचि में वृद्धि भी होती है। श्रावणी पर्व का वैज्ञानिक पक्ष पर्यावरण रक्षा के रूप में प्रचलित है।

सामाजिक पक्ष : श्रावण मास में वर्षा के कारण संन्यासी, वानप्रस्थी आदि वन त्यागकर नगर के समीप स्थानों पर आकर वास करते है। गृहस्थ आंश्रम का पालन करने वाले लोग अपनी आध्यात्मिक उन्नति के लिए महात्माओं का सत्संग करने के लिए उनके पास जाते है। महात्माओं के धर्मानुसार जीवन यापन, वैदिक ज्ञान, योग उन्नति एवं अनुभव गृहस्थियों को जीवन में मार्गदर्शन एवं प्रबंध में लाभदायक होता हैं। श्रवण पर्व का सामाजिक पक्ष ज्ञानी मनुष्यों द्वारा समाज को दिशा-निर्देशन एवं धर्म भावना को समृद्ध करना है। इस प्रकार से श्रावणी पर्व मानव के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण पर्व है।

यदि आज स्वामी दयानन्द सरस्वती जीवित होते तो...

सतीश आर्य
पश्चिमपुरी, नई दिल्ली

महर्षि दयानन्द सरस्वती आदित्य ब्रह्मचारी थे। आदित्य ब्रह्मचारी के विषय में स्वामी जी सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में छान्दोग्योपनिषद् के प्रमाण से लिखते हैं–

उत्तम ब्रह्मचर्य 48 वर्ष पर्यन्त का तीसरे प्रकार का होता है जैसे 48 अक्षर की जगती वैसे जो 48 वर्ष पर्यन्त यथावत् ब्रह्मचर्य करता है उसके प्राण अनुकूल होकर सकल विद्याओं को ग्रहण करते हैं। आचार्य और माता-पिता अपने संतानों को प्रथम वय में विद्या और गुणग्रहण के लिए तपस्वी करें और उसी का उपदेश करें और वे संतान आप ही आप अखंडित ब्रह्मचर्य सेवन से तीसरे उत्तम ब्रह्मचर्य का सेवन करके पूर्ण अर्थात् 400 वर्ष पर्यन्त आयु को बढ़ावें जैसे तुम भी बढ़ाओ...।

स्वामी जी आजीवन ब्रह्मचारी रहे और यदि उनपर विष प्रयोग नहीं होते तो वे पूर्ण आयु अर्थात् 400 वर्ष की आयु प्राप्त करते और हमारे अहोभाग्य से आजभी हमारे मध्य में उपस्थित होते और मानव समाजको अविद्या से दूर करते हुए सम्पूर्ण विश्व को आर्य बनाने के, वेद के पावन आदेश का पालन कर रहे होते। हम यहां उस सौभाग्यपूर्ण स्थिति का चित्रण करने का प्रयास कर रहे हैं कि यदि स्वामी दयानंद जी आज भी जीवित होते तो आर्य समाज, भारत तथा विश्व जनमानस के लिए किस प्रकार का कार्य कर रहे होते। उक्त चित्रण से पूर्व में स्वामी की विशेषताओं एवं उनकी बहुमुखी प्रतिभा को निम्न शब्दों में व्यक्त कर रहा हूं– वे आर्य समाज के संस्थापक, सत्यमानी, सत्यवक्ता, वेद और वेदानुकूल सत्यशास्त्रों के प्रबल पोषक, वेद, योग एवं यज्ञ के यथार्थ स्वरूप का बोध कराने वाले, सच्चे ईश्वर के उपासक, पूर्णतया विरक्त, ईश्वर की अटूट निष्ठा-युक्त, राष्ट्रप्रेमी, स्वदेश भक्ति से ओतप्रोत, आदित्य ब्रह्मचारी, स्वअपराधियों के प्रति क्षमाशील, पातंजलि योग प्रबल प्रतिपादक, योग की अंतिम स्थिति असम्प्रज्ञात समाधिनिष्ठ योगी, परमात्म साक्षात्कार किए हुए एवं परमात्मा की असीम अनुकम्पा से युक्त, जीवन मुक्त, ब्रह्मा से जैमिनि पर्यंत ऋषियों द्वारा प्रतिपादित वेदानुकूल ग्रंथों के प्रचारक एवं तदानुसार लेखन कार्य में सलंग्न, शास्त्रार्थ-शिरोमणि, शास्त्रार्थ समर में वेद एवं धर्म विरोधियों का मान मर्दन करने वाले, अतुल्स शारीरिक बलधारी, सर्वस्व त्यागी, त्रैतवाद के आर्ष सिद्धांत के प्रबल पोषक, गुरुकुल परंपरा के पोषक एवं आर्ष पाठविधि के अनुमोदक एवं प्रचारक, नारी शक्ति एवं सम्मान के समर्थक, अनार्ष ग्रंथों एवं वेद तथा ऋषि निंदक ग्रंथों के प्रबल विरोधी, दयावान्... थे। स्वामी जी द्वारा हो सकने वाले कार्यों को सामाजिक एवं धार्मिक वर्गों में कहा जा सकता है–

सामाजिक जीवन के क्षेत्र : 1. भारतीय स्वतंत्रता संग्रह का स्वरूप कुछ और ही होता। वे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी नेता होते और न भारत का विभाजन होता और न ही आज तक कश्मीर पर दोमुहीं नीति होती। उनके नेतृत्व में भारत को 1947 से पहले ही स्वतंत्रता प्राप्त हो जाती। **2.** भारत का संविधान इस रूप न होता। वे राष्ट्रधर्म को स्पष्ट रूप से प्रतिपादित करते और एक देश, एक भाषा, एक धर्म और सभी के लिए समान हितकारी नीतियों को बल देते, जिससे सभी भारतीय समान रूप से लाभांवित होते। अंग्रेजी शासन के दौरान भी अंग्रेज शासकों द्वारा उनकी अवहेलना न हो सकी, ऐसे में हम यह कह सकते हैं कि सिद्धांतहीन एवं मौकापरस्त देशी नेताओं का वे निश्चियपूर्वक मानव मात्र के हितार्थ मार्ग दर्शन करते। **3.** वे देश में प्रचलित सभी प्रकार की सामाजिक बुराईयों का विरोध करते और सामाजिक सर्वहितकारी नियमों को ही प्रचारित और प्रसारित करते।

धर्म के क्षेत्र में : 1. भारत धार्मिक एवं बौधिक क्षेत्र में आज भी विश्वगुरु होता। वे भारत के महाभारतकालीन गौरव को पुनः स्थापित करने में सफल रहते। 2. वे चारों वेदों के यथार्थ स्वरूप को सामने रखते। वेदों के विस्तृत भाष्य से हम सब ज्ञान प्राप्त कर रहे होते। वेदों के बाद वे पूरे आर्ष साहित्य और ऋषि प्रणीत ब्राह्मण ग्रंथों, उपवेद, शिक्षा, उपनिषदों, छह दर्शनों एवं कर्मकांड के ग्रंथों पर प्रमाणपूर्वक भाष्य करते। 3. वे शास्त्रार्थ शिरोमणि थे। आज भी भारत में शास्त्रार्थों का युग होता। उनके सामने वेद विरोधी, सत्यविरोधी, मतावलंबी, शास्त्रार्थों में परास्त होकर अपनी दुकानदारी को बंद करने पर मजबूर होते। जनता सत्य का स्वरूप जानकर अपने लिए कल्याण का मार्ग अपनाने में सफल रहती। 4. आज आर्य समाज में भाई-भतीजावाद, क्षेत्रवाद, वर्गवाद आदि नजाने क्या-क्या चल रहा है। स्वामी जी इस प्रकार की किसी भी गति विधि को कदापि स्वीकार नहीं करते। ऐसे किसी भी व्यक्ति के लिए आर्य समाज के द्वार कभी नहीं खुलते।

सृष्टि उत्पत्ति क्यों और कैसे?

आचार्य पं. उदयवीर शास्त्री

मानव को अपनी इस स्थिति के विषय में कदाचित अभिमान हो सकता है, पर अधिकाधिक उन्नति कर लेने पर भी यह सृष्टि रचना में सर्वथा असमर्थ रहता है। इसका कारण है मानव जब अपने रूप में प्रकट होता है, उससे बहुत पूर्व सृष्टि की रचना हो चुकी होती है, इसीलिए यह प्रश्न ही नहीं उठता कि मानव सृष्टि रचना कर सकता है। तब यह समस्या सामने आती है कि इस दुनिया को किसने बनाया होगा? भारतीय प्राचीन ऋषियों ने इस समस्या का समाधान किया है।

सृष्टि का सर्वोत्कृष्ट प्राणी मानव है। मानव को अपनी इस स्थिति के विषय में कदाचित अभिमान हो सकता है, पर अधिकाधिक उन्नति कर लेने पर भी यह सृष्टि रचना में सर्वथा असमर्थ रहता है।

इसका कारण है मानव जब अपने रूप में प्रकट होता है, उससे बहुत पूर्व सृष्टि की रचना हो चुकी होती है, इसीलिए यह प्रश्न ही नहीं उठता कि मानव सृष्टि रचना कर सकता है। तब यह समस्या सामने आती है कि इस दुनिया को किसने बनाया होगा?

भारतीय प्राचीन ऋषियों ने इस समस्या का समाधान किया है। जगत को बनाने वाली शक्ति का नाम परमात्मा है, इसको ईश्वर, परमेश्वर, ब्रह्म आदि को नामों से पुकारा जाता है। यह ठीक है कि परमात्मा इस पृथिवी, चांद, सूरज आदि समस्त लोक-लोकांतर रूप जगत को बनाने वाला है, परंतु जिस मूलतत्व से इस जगत को बनाया जाता है, वह अलग है। उसका नाम प्रकृति है। प्रकृति त्रिगुणात्मक कही जाती है। वे तीन गुण हैं- सत्व, रजस और तमस। इन तीन प्रकार के मूल तत्वों के लिए गुण का पद प्रयोग इसलिए किया जाता है कि ये तत्व आपस में गुणित होकर, एक-दूसरे में मिथुनीभूत होकर, परस्पर गुंथकर ही जगद्रूप में परिणत होते हैं। जगत की रचना पुण्यापुण्य, धर्माधर्म रूप शुभ-अशुभ कर्मों के करने और अनेक फलों को भोगने के लिए की जाती है। इन कर्मों को करने और भोगने वाले एक और चेतन तत्व है, जिसको जीवात्मा कहा जाता है। यह तीनों पदार्थ अनादि है- ईश्वर, जीवात्मा और प्रकृति।

जगत उत्पन्न होता है या नहीं?

प्रश्न- यह जगत कभी उत्पन्न नहीं होता, अनादि काल से ऐसा ही चला आता है और अनंतकाल तक ही ऐसा चला जाएगा, ऐसा मान लेने पर इसके बनने-बनाने का प्रश्न ही नहीं उठता, तब इसको बनाने के लिए ईश्वर की कल्पना करना व्यर्थ है। यह चाहे प्रकृति का रूप हो या कोई रूप हो, अनादि होने से ईश्वर की कल्पना अनावश्यक है।

उत्तर- जगत को जिस रूप में देखा जाता है, उससे इसका विकारी होना स्पष्ट होता है। यदि जगत अनादि-अनंद एक रूप हो, तो यह नित्य माना जाना चाहिए, नित्य पदार्थ अपने रूप में कभी परिणामी या विकारी नहीं होता, परंतु जागतिक पदार्थों में प्रतिदिन परिणामी होते देखे जाते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि पृथिव्यादि लोक-लोकांतरों की दृश्यमान स्थिति अपरिणामिनी अथवा अविकारिणी नहीं है। इसमें परिणाम का निश्चिय होने पर यह मानना पड़ेगा कि यह बना हुआ पदार्थ है, तब इसके बनाने वाले को भी मानना होगा।

प्रश्न- पृथिव्यादि को विकारी मानने पर भी बनाने वाले की आवश्यकता न होगी। जिन मूलतत्वों से इनका परिणाम होना है वे स्वतः इस रूप में परिणति होते रहते हैं। संसार में अनेक पदार्थ स्वतः होते देखे जाते हैं। अनेक स्वचालित यंत्रों का आज निर्माण हो चुका है।

उत्तर- पृथिव्यादि समस्त जगत जड़ पदार्थ है, चेतना-हीन। इसका मूल उपादान तत्व भी जड़ है। किसी भी जड़ पदार्थ में चेतन की प्रेरणा के बिना कोई क्रिया होना संभव नहीं। चेतना के संयोग के बिना किसी जड़ पदार्थ में स्वतः प्रवृत्ति होती नहीं देखी जाती। इसके न कोई युक्ति है, न दृष्टांत। स्वचालित यंत्रों के विषय में जो कहा गया, उन यंत्रों का निर्माण तो प्रत्यक्ष देखा जाता है।

उनको बनाने वाला शिल्पी उसमें ऐसी व्यवस्था रखता है, जिसे स्वचालित कहा जाता है। यंत्र अपने आप नहीं बन गया है, उसको बनाने वाला एक चेतन शिल्पी है और उस यंत्र की निगरानी व साज-संवार बराबर करनी पड़ती है, यह सब चेतना-सहयोग-सापेक्ष है, इसलिए यह समझना कि पृथिव्यादि जगत अपने मूल उपादान तत्वों से चेतन निरपेक्ष रहता हुआ स्वतः परिणत हो जाता है, विचार सही नहीं है। फलतः जगत के बनाने वाले ईश्वर को मानना होगा। ○○

■ क्रोध का भोजन 'विवेक' है, अतः इससे बचके रहना चाहिए। क्योंकि 'विवेक' नष्ट हो जाने पर, सब कुछ नष्ट हो जाता है।
■ वेदों में वर्णित सार का पान करने वाले ही ये जान सकते हैं कि 'जीवन' का मूल बिन्दु क्या है। *- महर्षि दयानन्द सरस्वती*

Arya Samaj Movement and its Contributions

By Dr. Ravi Srivastava- Priest, Arya Samaj Mississauga

Before we discuss the Arya Samaj and its contributions, we should ask a question "What compelled Maharishi Swami Dayanand to establish the Arya Samaj" He saw the degraded and debased condition of the Hindus. His heart bled at the sight of millions of people, weak, disjointed, deranged and almost chaotic, helpless and hopeless, ignorant. Deluded, servile and dominated by few proud, parasitical, living in luxury. He wanted to unite the Hindus into one united people to cast off the artificial and self-imposed bonds that tied them to their present position. He wanted them to remove from their eyes the bandage that prevented them from seeing the light of Truth and Liberty. He wanted the society to arise pure and strong from the prevailing welter and corruption, ignorance and internal strife and stand on its own feet and take the proper place among the nations of the world.

With the above goals in mind, Maharishi Swami Dayanand established the Arya Samaj on April 10, 1875 (Saturday, Chaitra Shukla 5, S.1932) in Dr Manik's garden near the Prathna Samaj Hall in Girgaun Road at 5:30 P.M..The Arya samaj was based entirely on the authority of the Vedas conditioned by Rationalism and Utilitarianism. The sixth Principle of the Arya samaj illustrates the main goal of the samaj. It states "The Prime object of the Samaj is to do good to the world, i.e to ameliorate physical, spiritual and social standards of all persons." Since its establishment, the Arya samaj movement has made innumerable contributions in the social and spiritual fields. Some of the contributions are enumerated below.

Religious Field: Polytheism, Idolatry, Iconolatry, Animal sacrifice to please GOD, Avatars and Incarnation of GOD, Ancestor worship (Sraddha), Pilgrimages, Pantheism and Priestcraft. Social Field: Untouchability, Caste System, Child marriage, Polygamy, Widow Marriages, Sati, Purdah, cow protection and Women Education and Equality.

Swamiji was deeply perturbed by the attitudes of Orthodox Brahmins towards the depressed class of the Hindus, known as Dalits, Outcaste or Untouchables. They were not allowed to enter Hindu temples, homes and Brahman rituals. They were prohibited to fetch water from the village wells. Their children were not allowed to study in the village school with other children. Swamji was first to declare equal rights for lower caste, the right for education, right for reciting Ved mantras, right for interdinning, right for marriage and right to fetch water from common wells. Swami Shraddhanand spent his whole life for the upliftment of the lower class. This cause was taken up by Mahatma Gandhi and the Congress Party during freedom movement. Thanks to Swamji that in 1950, The Indian Constitution adopted to provide equal social, religious and Cultural rights to the Dalits or Harijans. Swami Agnivesh has been fighting an uncompromising fight against untouchability.

Caste System: The Sanskrit word for the caste is Varna or Jati or Jat which means a group of people having a specific social rank. It also means " colour". Some authors believe that the Aryan wanted to maintain their distinction from Dravidians and used the colour to segregate them. According to Dr Karve, Varna is used in Vedas to denote class or category rather than colour. The Varna system allows us to see how a system can survive for several million years. With the evolution of society, in order to maintain law and order and to govern effectively, it became essential to classify people not only in terms of their different qualities but also with respect to their different privileges. OO

हैदराबाद-कर्नाटक मुक्ति संग्राम : एक परिचय

दिलीप शा घवालकार

इस देश में महान स्वतंत्रता सेनानियों, कर्मठ नेताओं आदि के संघर्ष, त्याग और बलिदान स्वरूप यह देश 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्र हुआ। विदेशी राजाओं तथा अंग्रेजों आदि के बर्बरतापूर्ण शासन से इस देश की धरती तथा जनता को मुक्ति मिली। भारत एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में स्थापित तथा घोषित हुआ पर बंगाल तथा पाकिस्तान का विभाजन इस देश की जनता के लिए एक बहुत बड़ी त्रासदी थी। देश स्वतंत्र होने के पश्चात जहां सभी ओर हर्षोल्लास मनाया जा रहा था, ढोल पीटे जा रहे थे, नगाड़े बजाये जा रहे थे, मिठाईयां बांटी जा रही थी, लोग खुशी से एक-दूसरे से गले मिल रहे थे, वहीं इसी समय, इसी देश के एक भाग में जनता खून की होली खेल रही थी और वह भाग था कर्नाटक प्रांत के उत्तर में स्थित हैदराबाद-कर्नाटक क्षेत्र। जी हां आज भी इस क्षेत्र को हैदराबाद-कर्नाटक के नाम से ही जाना जाता है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात पूरे भारत को एक परिवार एक राष्ट्र के रूप में देखा जा रहा था वही, ग्वालियर, कश्मीर, भोपाल, मैसूर, हैदराबाद जैसे प्रसिद्ध रजवाड़े, भारत सरकार की आधीनता को स्वीकार नहीं करना चाहते थे। वे सभी पूर्व की तरह अपना स्वतंत्र शासन चलाना चाहते थे। लेकिन भारत सरकार द्वारा उठाए गए कड़े कदम के चलते हैदराबाद के निजाम रियासत को छोड़ अन्य सभी ने सरकार की आधीनता स्वीकार कर भारत में विलय हुए।

उस समय तक हैदराबाद, आज के आंध्र प्रदेश की राजधानी, देश के समस्त रियासतों में सबसे शक्तिशाली तथा विशाल सल्तनत के रूप में स्थापित हो चुका था। अपनी इसी शक्ति के बलबूते उस समय के शासक मीर उस्मान अली ने भारत में विलीन न होने की बात कही। इस समय तक निजाम के शासनक की सीमा आंध्र प्रदेश के अलावा सीमावर्ती प्रांत के बीदर, गुलबर्गा, रायचुर, बल्लारी तथा वीजापुर के कुछ भू-भाग तक फैली थी।

इतने समस्त भू-भाग को हैदराबाद-कर्नाटक के नाम से जाना जाता था। 75 प्रतिशत जनता अलग-अलग धर्म जाति की थी। वहीं मात्र 25 प्रतिशत लोग मुसलमान थे, फिर भी बहुसंख्यकों पर अल्पसंख्यकों का शासन था। निजाम इस नीति के अनुपात को बनाये रखने में वर्षों सफल रहा पर भारत को मिली पूर्ण स्वतंत्रता के पश्चात जब उसके सम्मुख केंद्र सरकार के अधीनस्थ होने अथवा विलय होने की बात आयी तो उसने सीधे इनकार कर दिया।

इस बीच केंद्र में आंतरिक सरकार बनी। जब हैदराबाद के निजाम ने देश की भावी परिस्थिति का विचार कर अपने शासनकाल को बनाये रखने के उद्देश्य से एक कूटनीतिपूर्ण योजना बनायी। रजाकारों के अत्याचार से तंग आकर कई लोग अपना घर-बार छोड़ पड़ोस के प्रांतों, गांवों तथा शहरों को पलायन करने लगे। कई हिंदू परिवार अपना घर-द्वार और कारोबार छोड़कर परिवार के साथ निजाम राज्य के बाहर बसने लगे। शोलापुर सबसे समीप का शहर था। अनेक परिवार शोलापुर जाकर आश्रय लेने लगे। हैदराबाद, कर्नाटक क्षेत्र में आने वाले अधिकाधिक जो भी गांव शहर थे जैसे प्रमुख रूप में विदर, गुलबर्गा, रायचूर, बल्लारी इत्यादि में निजाम के सैनिकों ने धर्मांध जातिवाद, शोषण, अन्याय तथा बलात्कार आदि का खुलेआम तांडव मचा रखा था। जन समाज में आक्रोश तथा भय का आतंक मचा हुआ था। उस समय जगह-जगह रोजाकारों की मनमानी चलती थी तथा उनका कार्यालय तहसील व जिले स्तर पर था। हैदराबाद के निजाम संस्थान ने इस क्षेत्र पर 200 वर्षों से भी अधिक समय तक शासन किया था।

सम्पूर्ण भारत में ही अत्यंत धनी तथा विशाल हैदराबाद सल्तनत की स्थापना, मीर खमरुद्दीन चीन - खिलिजखान नेकी ने की थी। यह औरंगजेब का सेनाधिपति खाजी उद्दीनखान फिरोजजंग का पुत्र था। औरंगजेब की मृत्यु के छह वर्ष पूर्व 1713 में सम्राट फारूखशियाने मीर खमरुद्दीन को निजाम-उल-मुल्क फिरोज जंग की उपाधि से सम्मानित कर दक्खन, आज का पश्चिम आंध्र प्रदेश के सूबेदार के रूप में नियुक्त किया। इसने उत्तर के मालवा से दक्षिण के तिरुचिरापल्ली तक फैले समस्त दक्खन भू-भाग पर शासन किया।

कालान्तर में मुगल शासक महमूद शाह ने इसे आसफ जाही की उपाधि दी। इसी आसफ जाही नाम से ही वह आगे प्रसिद्ध हुआ। 1724 में शिखरखड़े नामक युद्ध में मुखेरिज खान को पराजित कर निजाम ने इस दक्षिण भारत में स्वतंत्र हैदराबाद सल्तनत की स्थापना की। तत्पश्चात हैदराबाद शहर को अपनी राजधानी बनाया तथा यही पर अपने राजमहल का निर्माण कराया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती : प्रेरक प्रसंग

मनमोहन कुमार आर्य

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती इतिहास में हुए ज्ञात वैदिक विद्वानों में अपूर्व विद्वान हुए हैं। वेद ईश्वरीय ज्ञान है और सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेदों का आविर्भाव सृष्टि की उत्पत्ति के आरम्भ में 1.96 अरब वर्ष पहले हुआ था। हमारे पूर्वजों ने इस ग्रन्थ रत्न की प्राणपण से रक्षा की। उनके पुरुषार्थ का ही परिणाम है कि आज हमें यह ग्रन्थ सुरक्षित प्राप्त हो रहे हैं। विदेशी विद्वान मैक्समूलर तक ने वेदों की रक्षा में प्राचीन भारतीयों द्वारा किये गये पुरुषार्थ पर आश्चर्य व्यक्त किया है। महर्षि दयानन्द ने युवावस्था में सत्य धर्म, ईश्वर तथा जीवात्मा के सत्य स्वरूप की खोज के लिए अपने माता-पिता, बन्धुओं व घर का त्याग कर सारे देश का भ्रमण किया और विद्वानों व योगियों की संगति कर ज्ञान प्राप्त किया।

प्रज्ञाचक्षु दंडी स्वामी गुरु विरजानन्द सरस्वती के यहां लगभग ढ़ाई वर्षों तक आर्ष व्याकरण का अध्ययन कर उनका अध्ययन पूरा हुआ था। इन्हीं गुरूजी की प्रेरणा से आपने असत्य का खंडन और सत्य का मंडन किया। असत्य के मंडन में ईश्वर के स्थान पर पाषाण व अन्य धातुओं की मूर्ति बनाकर ईश्वर की पूजा का खंडन भी सम्मिलित था। इसके अतिरिक्त अवतारवाद, फलित ज्योतिष, जन्मना जातिप्रथा, मृतक श्राद्ध आदि अनेक सामाजिक कुरीतियों का भी खंडन किया। महर्षि दयानन्द के धार्मिक-सामाजिक अंधविश्वासों व कुरीतियों के खंडन का कार्य केवल भावनाओं पर आधारित नहीं था अपितु इसके पीछे वेदों की विचारधारा, मानवजाति और देश का कल्याण तथा मनुष्यों को जीवन के चार पुरुषार्थों धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की उपलब्धि आदि अनेकानेक लाभ प्राप्त कराना प्रमुख उद्देश्य था जिसके लिए उन्होंने अपने समस्त निजी सुखों का त्याग किया था। वह खंडन का कार्य वेद प्रमाण, युक्ति, तर्क व सृष्टिक्रम के अनुरूप सत्यासत्य की परीक्षा कर किया करते थे। सृष्टि के इतिहास में हम महर्षि दयानन्द के समान समाज-देश व विश्व का हितैषी दूसरा ज्ञानी व पुरूषार्थी विद्वान महापुरुष नहीं पाते। अत: उन पर 'न भूतो न भविष्यति' लोकोक्ति पूरी तरह से सुशोभित होती है एवं वह इस उपमा के पूर्ण अधिकारी है।

महर्षि दयानन्द ने साधु ईश्वर सिंह को चारों वेदों के दर्शन कराये : महर्षि दयानन्द मार्च 1879 में वैदिक धर्म का प्रचार करने के लिए हरिद्वार के कुम्भ मेले में आये हुए थे। वहां पं. ईश्वर सिंह जी निर्मला साधु स्वामी दयानन्द जी से उनके डेरे पर मिले। स्वामी जी ने उन्हें कुर्सी पर बिठाया और स्वयं भी बैठ गये। साधु ने कहा-चारों वेदों के दर्शन हमें करवाइए। वे (स्वामीजी) भीतर से उठा लाये। साधु जी ने बड़े आनन्द से दर्शन किये फिर स्वामीजी ने महीधर तथा सायण कृत भाष्यों की भूलें व दोष उन्हें बताये। उन्होंने कहा कि इन धूर्तों ने अर्थों के महा अनर्थ किये हैं। यह प्रसंग सूचित करने का हमारा अभिप्राय: यह है कि उन दिनों भारत में एक स्थान पर चार वेदों का उपलब्ध होना संसार के प्रमुख आश्चर्यों में से कम नहीं था।

महर्षि दयानन्द के पास यह चारों वेद उपलब्ध थे और वह इन्हें हमेशा अपने पास रखते थे। हमें प्रयास करने पर भी अभी तक ज्ञात नहीं हो सका कि महर्षि को उस समय जब कि भारत में वेदों का कभी किसी प्रेस से मुद्रण नहीं हुआ था, हस्त लिखित चार वेद कहां, किससे व कब प्राप्त हुए थे? परन्तु उन्होंने पुरुषार्थ कर इन्हें प्राप्त कर एक बहुत असम्भव कार्य को सम्भव बनाया था। हम यह भी अनुमान करते हैं कि यदि महर्षि दयानन्द उन दिनों इस कार्य में प्रवृत्त न होते तो सम्भव था कि वेद हमेशा के लिए लुप्त हो जाते और वेद मंत्रों के सत्य अर्थों का फिर सृष्टि की शेष अवधि में किसी को ज्ञान ही न होता।

वेदों का संसार में सबसे अधिक महत्व है। यह इस कारण कि संसार में यदि सबसे अधिक मूल्यवान व पवित्र वस्तु कोई है तो वह ज्ञान है। इसीलिए ईश्वर प्रदत्त वेद मंत्र 'गायत्री मंत्र' में में ईश्वर से श्रेष्ठ बुद्धि अर्थात् ज्ञान की प्रार्थना व याचना की गई है।

गायत्री मंत्र में 'धियो यो न: प्रयोदयात्' कह कर ईश्वर से हमारी बुद्धि को श्रेष्ठ मार्ग जो कि केवल वेद मार्ग है, चलाने की प्रेरणा करने के लिए प्रार्थना की गई है। मनुष्य जीवन के लिए संसार का सबसे पवित्रतम व सर्वोत्तम ज्ञान 'वेद' है। इसकी रक्षा करना संसार के प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य व धर्म है। यह कार्य महर्षि दयानन्द ने किया इसी लिए वह संसार के पूज्य व सम्माननीय हैं। चार वेद आज से 146 वर्ष व उससे भी पहले से महर्षि दयानन्द के पास उपलब्ध थे।

OO

कण-कण में तू

कण-कण में तू, हर क्षण में तू,
हर दिल में तू, धड़कन में तू।
समाया हुआ जो सभी जगह,
इस धरा में तू, उस गगन में तू।
लहरों का उछाल है, नभ से भी तू विशाल है।
अग्न में जो ज्वाल है, विश्व का परम कृपाल है।
हर मन में तू, चिन्तन में तू।
फूलों का सौन्दर्य है, धन धान्य और ऐश्वर्य है।
इस चराचर जगत का, परम अनश्वर सत्य है।
हर स्वप्न में तू, जीवन में तू।
बहती हुई हवाओं में बरसती हुई घटाओं में।
नक्षत्रों में चमक तेरी, ब्रह्माण्ड की दिशाओं में।
हर दर्पण में तू, हर दर्शन में तू।
भावना के गीत में, और मधुर संगीत में।
जन-जन के हृदय में, दया करुणा प्रीत में।
हर वाणी में तू, नयन में तू।
जीवन के हर श्वास में, हृदय की आस में
युगों के विश्वास में, सत्कर्मों के प्रयास में।
हर स्मरण में तू, प्रयत्न में तू।
तू सदा तो पास है, तेरे दर्श की हमें प्यास है।
जन्म-जन्म से भटक रहे, बस तेरी हमें तलाश है।
इक बार झांको मन में तू, इक बार दिखो दर्शन में तू।
कण-कण में तू, हर क्षण में तू, हर दिल में तू, धड़कन में तू॥

➲ विजय गुप्त

धन्य है तुझको ऐ ऋषि

धन्य है तुझको ऐ ऋषि, तूने हमें जगा दिया।
सो-सो के लुट रहे थे हम, तूने हमें बचा लिया॥
अन्धों को आंखें मिल गईं, मुर्दों में जान आ गई।
जादू सा क्या चला दिया, अमृत सा क्या पिला दिया॥
वाणी में क्या तासीर थी, तेरे वचन में ऐ ऋषि।
कितने शहीद हो गये, कितनों ने सर कटा दिया॥
अपने लहू से लेखराम, तेरी कहानी लिख गया।
तूने ही लाला लाजपत, शेरे बब्बर बना दिया॥
श्रद्धा से श्रद्धानन्द ने, सीने में खाई गोलियां।
हस-हस के हंसराज ने, तन मन व धन लुटा दिया॥
तेरे दीवाने जिस घड़ी, दक्षिण दिशा को चल दिये।
मस्ती जहां पे छा गई, सबका ही दिल हिला दिया॥

➲ विनोद प्रकाश गुप्त

महर्षि स्वामी दयानन्द तुम्हें आना होगा

स्वामी दयानन्द, तुम्हें आना होगा, भूले भटकों को, राह दिखाना होगा
आर्य बदनाम करते हैं, बन अनार्य, पाठ उनको सभ्यता का पढ़ाना होगा
स्वामी दयानन्द, तुम्हें आना होगा॥

अज्ञानता अंधकार में खोए थे हम, ठग ठगते थे भोली जनता को
पंडे मनमानी करते थे, सत्य क्या है बताया तुमने,
साक्षरता का पाठ पढ़ाया तुमने, झूठ झुठलाने को, सत्य पताका फहराने को
तुम्हें आना होगा स्वामी दयानन्द तुम्हें आना होगा॥

भ्रम में पड़कर भ्रमित हो गए हैं हम, सत्य असत्य में भेद न जान पाए हम
धन कमाने को सम्पत्ति बढ़ाने को, दास लोलुपता के बन गए हम
भ्रष्ट हो गई है वृत्ति हमारी, कुंठित हो गई है प्रवृत्ति हमारी
भ्रष्टाचारी हो गए नेता हमारे, कपटी हो गए सचेता हमारे, सद्बुद्धि बढ़ाने को
सदाचार का पाठ पढ़ाने को, तुम्हें आना होगा, स्वामी दयानन्द तुम्हें आना होगा॥

पाश्चात्य सभ्यता का है बोलबाला, आध्यात्मिकता का निकला दिवाला
धन ही प्रधान हो गया, रिश्ता गौण हो गया, वृद्ध हैं रो रहे
करे पालन कौन इनका, हरे दुःख कौन इनका,
भारतीय सभ्यता का ध्वज लहराने को, गीता का पाठ पढ़ाने को
तुम्हें आना होगा, स्वामी दयानन्द तुम्हें आना होगा॥

बच्चों के रुदन से, दिशाएं हैं ध्वनित हो रही, दशा इनकी बद् से बद्तर हो रही
भूखे वह सो रहे, शोषित वह हो रहे, अभाव से दुखित हैं वह
औषधियों से वंचित हैं वह, शिक्षा का अभाव है, अंधविश्वास का प्रभाव है
बन शिक्षक तुम्हें आना होगा, स्वामी दयानन्द तुम्हें आना होगा॥

माताओं को न कोई जानता, पूज्यनीय हैं वह न कोई पहचानता
अभाव से पीड़ित हैं वह, द्रवित और दुखित हैं वह, सम्बल न कोई रहा
द्रोपदी की लाज बचाने को, बन कृष्ण तुम्हें आना होगा
स्वामी दयानन्द तुम्हें आना होगा॥

➲ प्रेम वैश्य

'ओउम्' : जप की सरलतम विधि

कृष्ण औतार, बढ़ापुर, बिजनौर

साधक-साधिका किसी भी एक आसन (पद्मासन, सिद्धासन या सुखासन) पर बैठने का अभ्यास पक्का कर लेवें। कमर, गर्दन, सिर सब सीधे रहें। शरीर का कोई अंग न हिले, आंखें बंद रहें। श्वास-प्रश्वास अत्यंत धीरे-धीरे चले, श्वास पर भी ध्यान देने की जरूरत नहीं। स्थान शुद्ध और पवित्र हो।

बैठने के लिए एक मीटर लंबी व एक मीटर चौड़ी तथा एक इंच मोटी रुई की गद्दी पर बैठें। समय, प्रातः सूर्योदय से पूर्व तथा शाम को सूर्यास्त के समय, सर्वोत्तम हैं- अन्यथा अपनी सुविधानुसार निश्चित कर लें। अपना-अपना आसन अलग-अलग होवे।

अपने आसन पर बैठकर ऐसा अनुभव करें 'मैं ब्रह्म= परमेश्वर की अमृतमयी गोद में स्थित हूं। निराकार ब्रह्म आकाशवत् सर्वव्यापक है, वह मेरे बाहर-भीतर सर्वत्र है।' इसके बाद सर्वप्रथम 'ओउम्' का नाद नाक से भ्रमर के गुंजार जैसा दीर्घ-श्वास लेकर ओं...ऊं...ऊं...म्- 3 से 11 बार तक अत्यंत प्रीति, भक्ति एवं श्रद्धा के साथ धीरे-धीरे करें, तत्पश्चात् मन

में 'ओउम्' कहते हुए धीरे-धीरे लंबी गहरी श्वास खींचे और मन में 'ओउम्-ओउम्' कहते हुए धीरे-धीरे बाहर फेंके। मन ही मन अनुभव करते चलें कि 'ओउम्' की दिव्य शक्तियां श्वास के द्वारा मेरे शरीर में सिर से पैर तक प्रवेश कर रही हैं तथा प्रश्वास के द्वारा 'ओउम्' हमारे सम्पूर्ण दुखों, कष्टों, दुगुर्णों और दुर्व्यसनों को दूर करता जा रहा है।

यह अभ्यास नियमित रूप से प्रतिदिन नियत स्थान पर प्रातः-सायं दोनों समय श्रद्धापूर्वक कम से कम आधा घंटा, अधिक एक घंटा अवश्य करें, विश्वास रखें अंतर्यामी प्रभु के अमृतानंद की वर्षा आपकी आत्मा में अवश्य होगी। जो व्यक्ति वृद्ध, रोगी अथवा दिव्यांग हैं, वे भी उपर्युक्त विधि से अपने बिस्तर में लेटकर, शरीर को एकदम ढीला छोड़कर, अपने को प्रभु की आनन्दमयी गोद में शयन करते हुए मानसिक अनुभव के साथ 'ओउम्' का नाद एवं श्वास प्रश्वास द्वारा जाप करके लाभ उठावें। सभी साधक निम्न गीत कंठस्थ करके गाया करें-

ओउम् है जीवन हमारा, ओउम् प्राणाधार है॥
ओउम् है कर्ता विधाता, ओउम् सर्वाधार है॥
ओउम् है दुख का विनाशक, ओउम् सर्वानंद है॥
ओउम् है बल तेजधारी, ओउम् करुणा कन्द है॥
ओउम् सबका पूज्य है, हम ओउम् का पूजन करें॥
ओउम् ही के ध्यान से हम शुद्ध अपना मन करे॥
ओउम् के गुरुमंत्र जपने से रहेगा शुद्ध मन॥
बुद्धि दिन प्रतिदिन बढ़ेगी, धर्म में होगी लगन॥
ओउम् के जप से हमारा ज्ञान बढ़ता जाएगा॥
अंत में यह जाप हमको मोक्ष तक पहुंचाएगा॥

प्रभु सबका कल्याण करें-
सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्॥

सबका भला करो भगवान्, सब पर दया करो भगवान्॥ सब पर कृपा करो भगवान्, सबका सब विधि हो कल्याण॥

'विद्या दान सबसे बड़ा दान है'

आर्ष गुरुकुल, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा आर्ष गुरुकुल शिक्षा प्रबंध समिति द्वारा संचालित वैदिक शिक्षा का उत्कृष्ट केंद्र आर्य समाज बी-69, सेक्टर-33, नोएडा में स्थापित पिछले 24 वर्षों से ब्रह्मचारियों को विद्वान बना रहा है। जो आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में सहयोग कर रहे हैं। इस समय 100 ब्रह्मचारी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। आर्ष गुरुकुल के प्रधानाचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार के नेतृत्व में दिन-रात चौगुनी उन्नति की ओर अग्रसर गुरुकुल को सहयोग देकर 'विद्या दान सबसे बड़ा दान है' में सहयोगी बनें। संस्था में निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था है कृपया उदार हृदय से आप सहयोग 'यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया', नोएडा सेक्टर-33 में खाता संख्या A/C No. 1483010112345, IFSC- UTB10SCN560 में भेजकर सूचित करें ताकि आपको पावती (रसीद) भेजी जा सके। धन्यवाद!

(आर्य कै. अशोक गुलाटी)
प्रबंध संपादक, 'विश्ववारा संस्कृति', मो. : 9871798221

सब दिशाओं में हम परस्पर द्वेष न करें : वेद

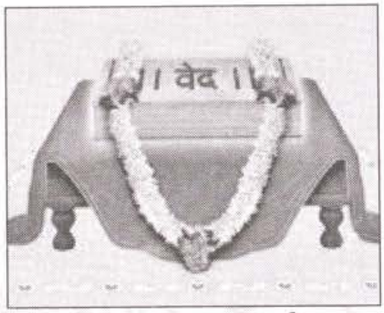

प्रो. चन्द्र प्रकाश आर्य

परस्पर द्वेष के कारण ही महाभारत का युद्ध हुआ। वर्तमान कालके विश्व युद्धों का मूल भी राष्ट्रों तथा समाजों का परस्पर वैरभाव है। इस बारे में- अथर्व वेद 3/27/1-6 के निम्न मंत्र द्रष्टव्य है- हे अग्निस्वरूप परमेश्वर, आप पूर्व दिशा के स्वामी हैं। आप बंधन रहित और रक्षक हैं। हे जगत के स्वामी, आप सब भांति हमारी रक्षा करने वाले हैं... हम आपके गुणों को नमस्कार करते हैं

वेद कहता है कि सब दिशाओं में हम किसी से द्वेष न करें और न कोई हमसे द्वेष करे। द्वेष या वैमनस्य ही घर, बाहर, व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक तथा सांसारिक वैर विरोध की जड़ है। परस्पर द्वेष के कारण ही महाभारत का युद्ध हुआ। वर्तमान कालके विश्व युद्धों का मूल भी राष्ट्रों तथा समाजों का परस्पर वैरभाव है। इस बारे में- अथर्व वेद 3/27/1-6 के निम्न मंत्र द्रष्टव्य है-

1. हे अग्निस्वरूप परमेश्वर, आप पूर्व दिशा के स्वामी हैं। आप बंधन रहित और रक्षक हैं। हे जगत के स्वामी, आप सब भांति हमारी रक्षा करने वाले हैं... हम आपके गुणों को नमस्कार करते हैं। जो कोई अज्ञान से हमसे द्वेष करता है और जिस किसी से हम द्वेष करते हैं, उस द्वेषभाव को हम आपकी न्यायव्यवस्था रूपी मुख में रखते हैं।
2. हे इन्द्र, आप हमारे दाहिनी ओर की दक्षिण दिशा के स्वामी हैं। आप तिर्यग् योनियों के प्राणियों अर्थात् कीट, पतंग, बिच्छू आदि टेढ़े चलने वाले अथवा दुष्ट प्राणियों से हमारी रक्षा करते हैं। माता-पिता और ज्ञानी लोग भी बाण के तुल्य हमारे रक्षक हैं। हम आपको पुन: नमन करते हैं।
3. हे परमेश्वर, आप पश्चिम दिशा के स्वामी हैं। बड़े-बड़े अजगर तथा सर्प आदि विषधारियों से तथा अन्य हिंसक प्राणियों से हमारी रक्षा करते हैं। भोज्यपदार्थ एवं औषधियां हमारी जीवन रक्षक है।
4. हे शांति और आनंददायक परमेश्वर, आप उत्तर दिशा के स्वामी हैं। आप अजन्मा हैं, सबके रक्षक हैं, जो हमसे द्वेष करता है और जिससे हम द्वेष करते हैं, उस द्वेषभाव को आपके न्याय पर छोड़ते हैं।
5. हे सर्वव्यापक परमेश्वर, आप नीचे की दिशा के स्वामी हैं। हम आपके रक्षक एवं जीवनदायक गुणों को नमस्कार करते हैं।
6. हे सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के स्वामी। आप हमारे ऊपर की दिशा के स्वामी हैं। हे ज्ञानमय परमात्मा। आप हमारे रक्षक हैं। हम आपको आपके गुणों के लिए पुन: पुन: नमन करते हैं।

अथर्ववेद 3/27/1-6 के इन छह मंत्रों को बार-बार दोहराया गया है कि जो कोई हमसे द्वेष करता है, जिस किसी से हम द्वेष करते हैं, उस द्वेषभाव/वैर या वैमनस्य को हम आपकी न्याय-व्यवस्था पर छोड़ते हैं। इसी द्वेषभाव के कारण घर-परिवार हिंसा ग्रस्त है। परिवार में एक दूसरे की हत्या कर डालते हैं। व्यक्तिगत/ पारिवारिक द्वेषभाव का दूसरा उदाहरण स्व. रुचिका कांड है जहां 19 साल बाद भी रुचिका का परिवार पूर्व डीजीपी राठौड के द्वेष/वैरभाव का शिकार है।

तीसरा उदाहरण जातीय विद्वेष/ वैरभाव का है जहां खैरलांजी, महाराष्ट्र गांवमें सितम्बर 2006 में एक दलित परिवार के चार लोगों की हत्या कर दी गई। तालिबान धार्मिक विद्वेष का उदाहरण है, वे दुनिया भर में आतंक और हत्याएं फैला रहे हैं। राजनीतिक द्वेष एवं वैरभाव का उदाहरण इजरायल और फिलीस्तीन हैं जहां कभी परस्पर वैर-वैमनस्य खत्म होने का नाम नहीं लेता। यद्यपि संयुक्त राष्ट्र संघ विश्व में संसार के लोगों तथा राष्ट्रों में शांति, भाई-चारा, सद्भाव स्थापित करने के लिए लगा है किंतु फिर भी राष्ट्रों में, विभिन्न समाजों में परस्पर द्वेष, घृणा, वैरभाव जारी है।

इसलिए वेद ने इन मंत्रों अथर्व. 3/27/1-6, में कहा है कि पूर्व दिशा, दक्षिण दिशा, नीचे की दिशा और ऊपर की दिशा- इन सब दिशाओं में हमसे कोई द्वेष न करे और न ही हम किसी से द्वेष करें। वेद की यह उदात्त भावना देशकाल की सीमाओं से परे है।

समस्त राष्ट्रों तता समस्त मानव समाज के लिए है। उससे भी ऊपर समस्त दिशाओं के लिए है। जब चारों ओर द्वेष भाव/वैरभाव नहीं होगा तो सब ओर शांति, खुशहाली एवं सबकी समृद्धि होगी। समस्त धरती एक परिवार है- **वसुधैव कुटुम्बकम,** यह कथन तभी सार्थक होगा जब हम परस्पर द्वेषभाव को त्याग दें और एक दूसरे से प्रेम करें। ○○

समाचार - सूचनाएं

- हरिद्वार में सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में भव्य अंतरराष्ट्रीय गुरुकुल सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें भारत वर्ष के समस्त गुरुकुलों, संन्यासियों, विद्वानों, आर्य वीर-वीरांगनाओं और आर्यसमाज, आर्षगुरुकुल नोएडा के ब्रह्मचारियों, अधिकारियों, वानप्रस्थियों व सदस्यों और शिक्षकों ने भाग लिया।
- अंतरराष्ट्रीय गुरुकुल सम्मेलन में आर्यनेताओं व राजनीतिज्ञों द्वारा भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनाया गया और महत्वपूर्ण निर्णय गुरुकुल शिक्षा पर लिये गये।
- 71वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर आर्यसमाज, आर्षगुरुकुल नोएडा में भव्य आयोजन किया जा रहा है।
- श्रावणी पर्व के अवसर पर 18 अगस्त 2018 दिन शनिवार को उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान एवं आर्ष गुरुकुल नोएडा के संयुक्त तत्वावधान में संस्कृत भाषण, संस्कृत गीत एवं अष्टाध्यापी सत्र अंत्याक्षरी आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा रहा है।
- श्रावणी पर्व के अवसर पर 19 अगस्त दिन रविवार को आर्ष गुरुकुल नोएडा में नव प्रविष्ट ब्रह्मचारियों का उपनयन संस्कार किया जा रहा है।

“एक बार जर्मन दार्शनिक ने स्वामी दयानंद से कहा, 'स्वामी जी, आपका बलिष्ठ शरीर और ओजस्वी मुखमंडल देखकर मैं अत्यंत प्रभावित हूं। क्या मुझ जैसे सामान्य व्यक्ति के लिए यह संभव है कि आप सशक्त शरीर और तेजयुक्त मुखमंडल प्राप्त हो सकें?

स्वामी जी बोले, 'क्यों नहीं, जो व्यक्ति अपने को जैसा बनाना चाहता है, बन सकता है। हर व्यक्ति अपनी कल्पना के अनुरूप ही बनता-बिगड़ता रहता है। तुम्हें सबसे पहले एक लक्ष्य बनाना चाहिए, फिर उसकी पूर्ति के लिए संकल्प करके उसी के अनुसार काम करना चाहिए। एकाग्र मन से किए गए कार्य एक दिन सफलता की मंजिल पर अवश्य लाकर खड़ा करते हैं।'

- महर्षि दयानन्द सरस्वती”

स्वतंत्रता दिवस और श्रावणी पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा द्वारा समस्त जनों को स्वतंत्रता दिवस और श्रावणी पर्व पर हर प्रकार की सुख, समृद्धि, स्वास्थ्य और शांति की कामना से परिपूर्ण बधाई।

स्वतंत्रता दिवस और श्रावणी पर्व आर्यों के लिए ईश्वर भक्ति के मार्ग की सर्वोच्च प्रेरणा बने, ऐसी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है।

■ **प्रबंध संपादक**

सूचना : आदरणीय सदस्यों से निवेदन है कि आपकी प्रिय मासिक पत्रिका 'विश्ववारा संस्कृति' मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका निरंतर प्रकाशित हो रही है और आप तक समय पर पहुंच रही है।

आपने सदस्यता ग्रहण करके वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु जो सहयोग प्रदान किया तदर्थ धन्यवाद!

कुछ सदस्यों का मासिक सदस्यता शुल्क जनवरी 2018 को समाप्त हो गया है फिर भी पत्रिका निरंतर प्रेषित की जा रही है। अधिक समय तक शुल्क न मिलने पर पत्रिका का प्रेषण करना संभव नहीं हो पाएगा। अतः आपसे निवेदन है कि अपना शुल्क भेजकर सहयोग प्रदान करें।

चैक/मनीआर्डर 'आर्यसमाज' के नाम भिजवाएं अथवा आप लोग सीधे ही 'यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया', नोएडा सेक्टर-33 में खाता संख्या A/C No. 1483010100282, IFSC- UTB10SCN560 में जमा करा कर रसीद की प्रतिलिपि निम्न पते पर भेजें।

■ **प्रबंध संपादक, 'विश्ववारा संस्कृति', आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा (उ.प्र.) मोबाइल : 9871798221**

'विश्ववारा संस्कृति' के नियम व सविनय निवेदन

1. यदि 'विश्ववारा संस्कृति' दिनांक 15 तक नहीं पहुंचती है तो आप प्रधान संपादक के नाम पत्र डालें। पत्र मिलते ही 'विश्ववारा संस्कृति' पुनः भेज दी जायेगी।

2. वार्षिक शुल्क तथा आजीवन शुल्क मनीआर्डर द्वारा आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा के नाम भेजें। वीपी, रजिस्ट्री द्वारा नहीं भेजा जायेगा।

3. लेख संपादक 'विश्ववारा संस्कृति' के नाम भेजें, लेख छोटे, सरल, संक्षिप्त होने चाहिए तथा स्पष्ट, शुद्ध एवं सुंदर लेख कागज के एक ओर लिखे होने चाहिए।

4. 'विश्ववारा संस्कृति' में विज्ञापन भी दिये जाते हैं, परंतु विज्ञापन शुद्ध एवं वास्तविक वस्तु का ही दिया जायेगा।

5. यह 'विश्ववारा संस्कृति' पत्रिका समाज-सुधार की दृष्टि से मानव कल्याणार्थ निकाली जाती है। इसमें आपको धर्म, यज्ञ कर्म, समाज सुधार, देश व समाज की स्थिति, ब्रह्मचर्य, स्वास्थ्य, योगासन, सदाचार, संस्कार, नैतिकता, वैदिक विचार, शिक्षा आदि एवं अन्य ऐसे विषयों पर लेख पढ़ने को मिलेंगे।

6. 'विश्ववारा संस्कृति' के दस ग्राहक बनाने वाले सज्जन को एक वर्ष तक निःशुल्क 'विश्ववारा संस्कृति' भेजी जायेगी तथा पचास ग्राहक बनाने वाले सज्जन को दो वर्ष निःशुल्क पत्रिका भेजी जायेगी तथा उसका फोटो सहित जीवन-परिचय 'विश्ववारा संस्कृति' में निकाला जायेगा।

7. अन्य पत्र-पत्रिकाओं में पहले छपा हुआ लेख 'विश्ववारा संस्कृति' में नहीं छापा जायेगा।

8. अनाधिकृत रूप से लिए लेख, रचना, कविता के लिए प्रेषक ही उत्तरदायी होंगे।

आर्य कै. अशोक गुलाटी
प्रबंध संपादक

'विश्ववारा संस्कृति'
आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा, उप्र
संपर्क सूत्र : 0120-2505731, 9871798221
ई-मेल : info.aryasamajnoida33@gmail.com
captakg21@yahoo.co.in

आर्य समाज की स्थापना

1863 से 1875 ई. तक स्वामी जी देश का भ्रमण करके अपने विचारों का प्रचार करते रहें। उन्होंने वेदों के प्रचार का बीड़ा उठाया और इस काम को पूरा करने के लिए संभवतः 7 या 10 अप्रैल 1875 ई. को 'आर्य समाज' नामक संस्था की स्थापना की। शीघ्र ही इसकी शाखाएं देश-भर में फैल गई। देश के सांस्कृतिक और राष्ट्रीय नवजागरण में आर्य समाज की बहुत बड़ी देन रही है। हिन्दू समाज को इससे नई चेतना मिली और अनेक संस्कारगत कुरीतियों से छुटकारा मिला। स्वामी जी एकेश्वरवाद में विश्वास करते थे। उन्होंने जातिवाद और बाल-विवाह का विरोध किया और नारी शिक्षा तथा विधवा विवाह को प्रोत्साहित किया। उनका कहना था कि किसी भी अहिन्दू को हिन्दू धर्म में लिया जा सकता है। इससे हिंदुओं का धर्म परिवर्तन रुक गया। गुरु की आज्ञा शिरोधार्य करके महर्षि स्वामी दयानन्द ने अपना शेष जीवन इसी कार्य में लगा दिया। हरिद्वार जाकर उन्होंने 'पाखंडखंडिनी पताका' फहराई और मूर्ति पूजा का विरोध किया। उनका कहना था कि यदि गंगा नहाने, सिर मुंडाने और भभूत मलने से स्वर्ग मिलता, तो मछली, भेड़ और गधा स्वर्ग के पहले अधिकारी होते। बुजुर्गों का अपमान करके मृत्यु के बाद उनका श्राद्ध करना वे निरा ढोंग मानते थे। छूत का उन्होंने ज़ोरदार खंडन किया। दूसरे धर्म वालों के लिए हिन्दू धर्म के द्वार खोले। महिलाओं की स्थिति सुधारने के प्रयत्न किए। मिथ्याडंबर और असमानता के समर्थकों को शास्त्रार्थ में पराजित किया। अपने मत के प्रचार के लिए स्वामी जी 1863 से 1875 तक देश का भ्रमण करते रहे। 1875 में आपने मुम्बई में 'आर्यसमाज' की स्थापना की और देखते ही देखते देशभर में इसकी शाखाएं खुल गईं। आर्य समाज वेदों को ही प्रमाण और अपौरुषेय मानता है। OO

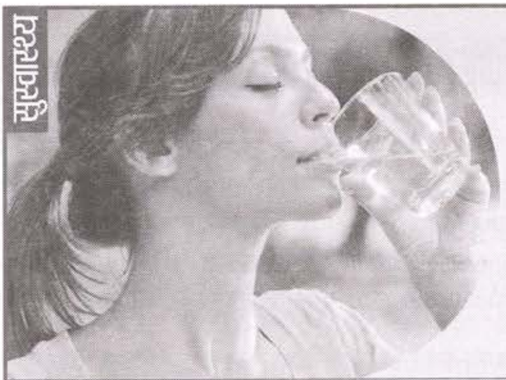

गर्म पानी विषैले पदार्थों को निकाले बाहर

बुखार होने पर अगर प्यास लगे तो ठंडा पानी न पिएं, इसकी जगह गर्म पानी पीना फायदेमंद होता है। ज्यादातर बीमारियां गंदा पानी पीने से होती हैं। ऐसे में गर्म पानी को ठंडा करके पीने से पेट की कोई बीमारी नहीं होती है। गर्म पानी कफ और सर्दी की परेशानी को दूर करता है। खाली पेट सुबह 1 ग्लास गर्म पानी में नींबू डालकर पीने से शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है और शरीर को विटमिन सी भी मिलता है।

आपको ज्यादा पानी पीने की आदत डालनी चाहिए। ज्यादा पानी पीने से आपकी सेहत हमेशा तरो-ताजा बनी रहेगी। यदि आप यही पानी गर्म कर के पिएंगे तो आपकी सेहत में चार चांद लग जाएंगे। कुछ लोग गर्म पानी नियमित तौर पर पीने के फायदे के बारे में अवेयर रहते हैं। आपको नियमित रूप से गर्म पानी पीना चाहिए? जितना हो सके पानी पिएं और स्वस्थ्य रहें। डॉक्टर्स भी इस बात को मानते हैं रोजाना गर्म पानी पीने से शरीर और तंदुरुस्ती पर इसका अच्छा असर पड़ता है। कई शोध में यह बात सामने आई है कि गर्म पानी से ब्लड सर्कुलेशन इंप्रूव होता हे और वजन भी घटता है। आप सुबह एक गिलास गुनगुना पानी पिएं या खाने के बाद। लेकिन ध्यान रखिए गर्म पानी पीने के थोड़े से साइड इफेक्ट भी हैं। यदि आपको कोई हेल्थ इश्यूज है तो एक बार गर्म पानी पीने से पहले डॉक्टर से परामर्श जरूर ले लें।

गर्म पानी पीने के क्या-क्या हो सकते हैं फायदे

विषैले पदार्थ बाहर निकाले : हमारे शरीर में बनने वाले विषैले पदार्थों को गर्म पानी बाहर निकाल देता है। गर्म पानी हर उम्र के लिए फायदेमंद है। यह शरीर से विषैले पदार्थ निकालकर शरीर को स्वस्थ बनाता है। गर्म पानी पीने की आदत डालकर आप प्राकृतिक रूप से शरीर से विषैले पदार्थ निकाल सकते हैं।

वजन घटाएं : गर्म पानी बॉडी में जमे फैट को हटाने का काम करता है। इसलिए वजन कम करने वाली चीजों के साथ गर्म पानी पिया जा सकता हैं।

बेहतर डाइजेशन : यदि अपचन जैसी प्रॉब्लम होती है, तो गर्म पानी पीने शुरू कर दें। खाने के दौरान गर्म पानी पीने से यह खाने को पचाने में सहायक होता है और रोजाना इस आदत के जरिए पाचन क्रिया बेहतर बनाती है और आप कब्ज को भी दूर रह सकते हैं।

बढ़ती उम्र के असर को रोंके : बढ़ती उम्र के असर को रोंके के लिए गर्म पानी एंटी एजिंग थैरेपी का काम करता है। ये त्वचा की कोशिकाओं पर बढ़ती उम्र के असर को कम करने के साथ आपके चेहरे को जवां बनाएं रखता है।

गला करे साफ : साफ गर्म पानी पीने का एक और फायदा है, सदियों से लोग गर्म पानी पीते आ रहे गले को साफ और स्वस्थ रखने के लिए। इससे गले से जुड़े संक्रमण दूर होने में मदद मिलती है। इसे रक्त प्रवाह का संकुलन बना रहता हैं।

बेहतर नींद के लिए : रोजाना गर्म पानी पीने से सबसे अच्छा फायदा यह है कि इससे आपको गहरी नींद आती है। यह शरीर को रिलेक्स करने के साथ ही नींद को उकसाता है।

ब्लड सर्कुलेशन बेहतर करे : गर्म पीने से शरीर में ब्लड सर्कुलेशन बेहतर होता है और यह आपके मांसपेशियों और तंत्रों के लिए असरदायक होता है।

मेटाबॉलिक की दर बढ़ाता है : कई स्टडीज में यह बात सामने आई है कि गर्म पानी पीने से मेटाबॉलिक दर बढ़ती है। जो किसी पाचन क्रिया के लिए अच्छा होने के साथ ही यह पेट संबंधी बीमारियों को दूर रखता है।

स्किन ग्लो करेगी : किसी भी तरह की त्वचा संबंधी समस्या हो या फिर चेहरे पर नैचरल ग्लो लाना हो, गर्म पानी इसका सही उपाय है। रोज सुबह-सुबह गर्म पानी पीना शुरू कर दें। थोड़े ही दिनों में आपकी स्किन ग्लो करने लगेगी और बाकी स्किन प्रॉब्लम्स भी दूर हो जाएंगी।

मुंहासे : मुंहासों की समस्या लड़कियों में ही नहीं आजकल लड़कों में भी देखी जा सकती है। इससे बचने के लिए खाली पेट सुबह गर्म पानी पिएं। इससे पिंपल्स से भी छुटकारा मिल जाएगा। गर्म पानी शरीर से अतिरिक्त चर्बी को घटा देता है और आपका शरीर स्लिम होने लगता है। रोगों से बचने के लिए गर्म पानी से गरारा करें और गर्म पानी पिएं।

भूख बढ़ाए : जिन लोगों को भूख न लगने की समस्या होती है, उन्हें एक ग्लास गर्म पानी में काली मिर्च, नमक और नींबू का रस डालकर पीना चाहिए। इससे भूख बढ़ जाती है।

- गर्म पानी से ब्लड सर्कुलेशन इंप्रूव होता है और वजन भी घटता है
- गर्म पानी पीने से आप प्राकृतिक रूप से शरीर से विषैले पदार्थ निकाल सकते हैं
- बढ़ती उम्र के असर को रोकने के लिए गर्म पानी एंटी एजिंग थैरेपी का काम करता है

आर्ष कन्या गुरुकुल वेदधाम सोरखा में नवनिर्मित पाकशाला के उद्घाटन अवसर पर पधारे महानुभाव।

आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ करते हुए पधारे सभी महानुभाव एवं कन्या गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियां।

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल सम्मेलन हरिद्वार में आचार्य बालकृष्ण जी एवं स्वामी धर्मेश्वरानंद जी के साथ आर्य समाज नोएडा की प्रधान गायत्री मीना।

आर्य समाज नोएडा के कोषाध्यक्ष श्री आर.एल. लवानिया जी द्वारा किये सामाजिक कार्यों के लिए (बी.एस. फाउंडेशन ट्रस्ट) के अधिकारियों द्वारा सम्मानित किया गया।

आर्य समाज, बी-69, सैक्टर-33, नोएडा (उ.प्र.) दूरभाष : 0120-2505731, 9871798221